R.N.I No. 25078/72

S.S.P./L.W.P./265/02/2006-08

मंसूरी पैग़ाम

सुल्तान टीपू

मूल्य रु० 10/-

अधिकार सम्मेलन विशेषांक

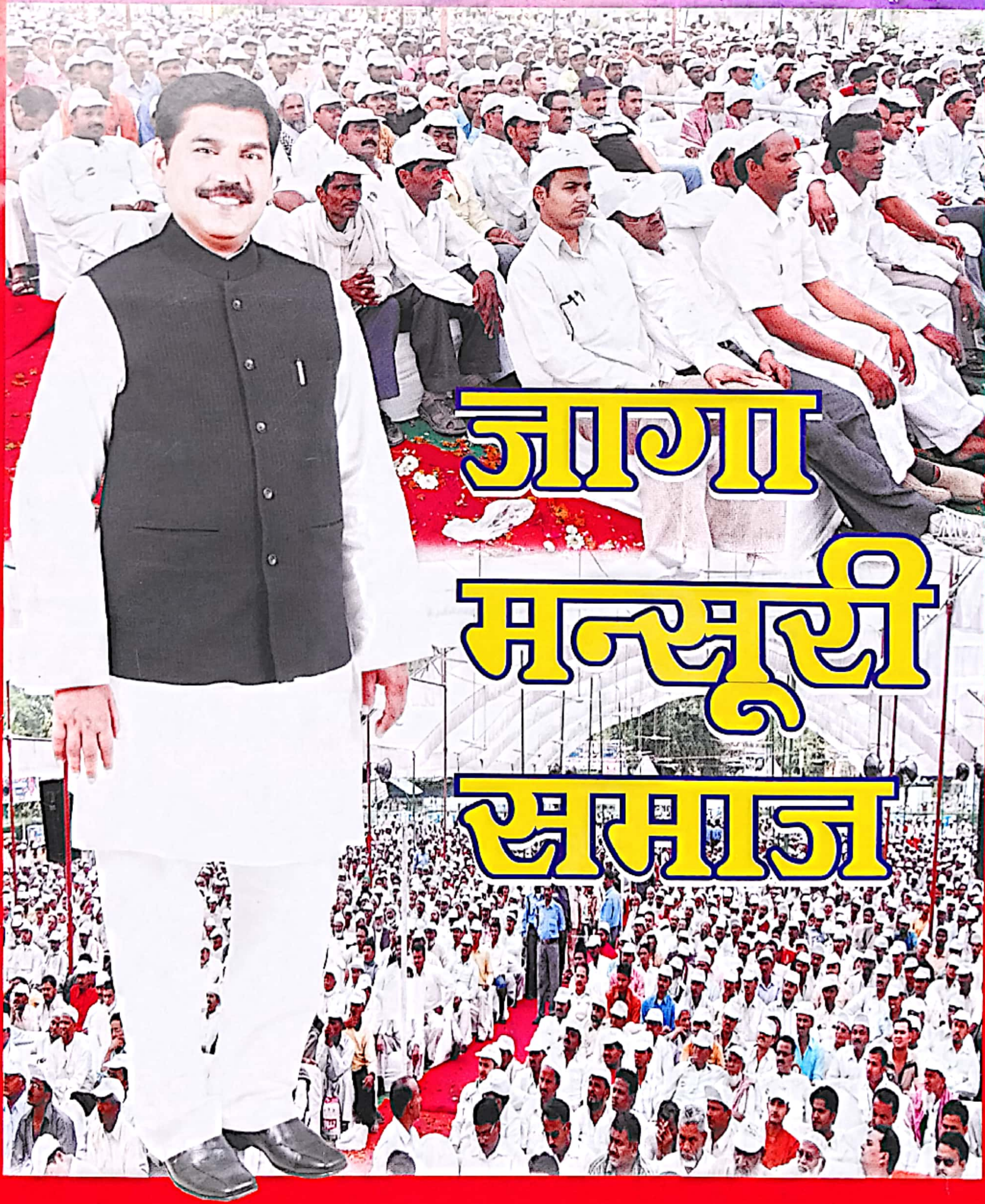

Scanned with OKEN Scanner

मा. रामचन्द्र सिंह, प्रधान, उपाध्यक्ष अवास बन्धू उ.प्र. सरकार

अधिकार सम्मेलन की सी.डी. का विमोचन

Scanned with OKEN Scanner

40 सालों से पसमांदा मंसूरी समाज की दबी और कमज़ोर आवाज़ को फर्श से अर्श की बुलंदियों पर पहुंचाने वाला अलमबरदार

मंसूरी पैग़ाम

18 साल, 21 हिस्सा, 7 जून, 2009

खानदाने -ए- मंसूरी पैग़ाम

बानिये तंजीम

आली जनाब मुनीर बख्श मंसूरी जालौनवी

सरपरस्त शोर-ए-इम्त्याजी

आली जनाब कलीमुद्दीन शम्स, कलकत्ता

आली जनाब एच. इब्राहीम, कर्नाटक

सरपरस्त

जनाब के. नूर मोहम्मद मंसूरी अनन्तपुर, A.P.

जनाब गुल मोहम्मद मंसूरी, जयपुर, राज.

जनाब वकील अहमद मंसूरी, लखनऊ

जनाब शेख मो. रफीक मंसूरी पार्षद, मुम्बई

जनाब हाजी मो. तय्यब मंसूरी, मुम्बई

जनाब अब्दुल हसन मंसूरी (मामू), दिल्ली

जनाब ए. जलील मंसूरी, मुम्बई

जनाब मो. हनीफ मंसूरी, परियावां प्रतापगढ़

प्रधान सम्पादक

हाजी नबी बख्श मंसूरी

M- 9935213686

आफिस नामानिगार

आफताब आलम मंसूर

M- 09454198444

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक नबी बख्श मंसूरी द्वारा कार्यालय साप्ताहिक मसूरी पैगाम, पैगाम प्रिन्टर्स से मुद्रित कराकर S.S.E./47, सेक्टर सी सबौली, कुर्सी रोड़, लखनऊ-21 से प्रकाशित।
Mob.: 9935213686

मंसूरी पैगाम के किसी भी वाद-विवाद का निपटारा लखनऊ क्षेत्र की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों में होगा

एक नजर में

05

अधिकार सम्मेलन

40

बसपा का बढ़ता जनाधार

आपके खुतूत	-	4
अधिकार सम्मेलन	-	5
समाज पिछड़ा	-	10
धुनकर आयोग	-	11
दिल्ली जाने के लिए......	-	13
लड़कियों में तालीम	-	15
तंजीम मजबूत करें	-	16
इंसान तौले नहीं जाते	-	17
तोहफा	-	19
कर्ज चुकाना है	-	20
एक नेता चुनो	-	21
अल्लाह एक है	-	23
वोट एक साथ.	-	24
सदर का आवाहन	-	26
जंग हार गया	-	27
निकाह में आसानियां	-	29
मंसूरी तराना	-	31
रिश्तों की जानकारी	-	32
53वां जन्मदिन	-	37
पत्थर की चोट	-	38

Scanned with OKEN Scanner

प्रधान सम्पादक

मेरी कलम

खिदमत-ए-खल्क

दुनिया के नेक बन्दें खिदमत–ए–खल्क को अपना पहला फर्ज समझतें है। ये बात इस कलाम से साफ हो जाती है कि अल्लाह तआला ने हजरत लुकमान हकीम रह0 से पूछा कि वो दुनिया में बादशाहत चाहता है या खिदमत–ए–खल्क हजरत लुकमान रह0 ने जवाब दिया कि अगर अल्लाह तआला की मर्जी है कि मैं बादशाहत करू तो मै कुबूल करता हूँ और अगर अल्लाह मेरी मर्जी जानना चाहता है तो मै खिदमत–ए–खल्क को पसन्द करूगा, क्योंकि बादशाहत की मामूली सी कोताही के लिये दरबार–ए–इलाही में जवाब देही होगी और खिदमत–ए–खलक के लिये मैं आजाद हूँ।

सदियों से मन्सूरी समाज को दबा कर रखा गया। क्योंकि कलम और ताकत दोनों ही अशराफ के हाथो में रही है दस्तकार मुसलमानों को तालीम और सियासत से दूर रखा जाता था। साठ साला आजादी में भी हमारा शोषण होता रहा है। हमारे वोट से सरकार तो बनाते रहे लेकिन पसमांदा समाज के खराब हालात की तरफ किसी लीडर ने गौरोफिक्र नहीं किया। जबकि मन्सूरी समाज की आबादी मुस्लिम समाज में 30 प्रतिशत से ज्यादा है फिर भी हमारा कोई कौमी और सियासी रहनुमा नहीं बना।

लेकिन अब वक्त बदल गया है। मन्सूरी समाज के पास तालीम याफता लोग भी हैं अगर कमी थी तो सिर्फ संगठन की लेकिन मुरादाबाद कांफ्रेंस में एक ऐसा सूरज रूनुमा हुआ जिस की चमक से आज मन्सूरी समाज रोशन है।

वह उत्तर प्रदेश का शेर आली जनाब अनीस मन्सूरी है जिसनें इस 30 माह की छोटी सी मुद्दत में समाज और सियासत में अपने नाम के साथ ही मन्सूरी समाज का नाम ऊंचा किया। 29 मार्च के अधिकार सम्मेलन के बाद बसपा सुप्रीमो बहन मायावती जी ने इस लोकसभा चुनाव में सदर अनीस मन्सूरी को उ.प्र. का जोनल कोआर्डिनेटर और दिल्ली प्रदेश में मुस्लिम समाज का प्रभारी बनाया। इसलिए मन्सूरी समाज ने भी मिलकर यह ठान लिया है कि बहन मायावती को दिल्ली की गद्दी तक पहुंचाना है।

आप सभी का शुक्रिया अदा करना लाज़मी है क्योंकि जिस तरह से आप सब ने मिलकर अधिकार सम्मेलन को कामयाब बनाया है वह तारीफ के काबिल है। आप सब ने साबित कर दिया है कि हम सब जनाब अनीस मन्सूरी को अपना नेता कबूल करते हैं।

आपके खुतूत

मंसूरी पैग़ाम पत्रिका हमारे दिलों में रचबस गई है जब तक अगला अंक नहीं मिलता बेचैनी सी रहती है। पिछले मजामीन को पढ़ने के बाद मैंने आप से एक गुजारिश की थी कि सभी सूबों में आल इण्डिया मन्सूरी समाज को संगठित कर समाज को एक प्लेट फार्म पर लाने व उनके माली हालात को सुधारने के लिये पूरे मुल्क में तंजीमी ढांचा खड़ा किया जा रहा है।
मुझे बड़ा अफसोस होता है कि उत्तराखण्ड प्रदेश में तंजीमी कारकर्दगी बिल्कुल ही न के बराबर है जबकि इस प्रदेश में मन्सूरी समाज लाखों की तादात में है। नैनीताल, उद्यमसिंह नगर में ही हजारों की तादात में बिरादर भाई रहते है। फिर भी यहां कोई संगठन नहीं है।
जनाब सम्पादक साहब से गुजारिश है कि मेरे दिल की आवाज उत्तर प्रदेश सदर आली जनाब अनीस मन्सूरी साहब तक पहुंचाने की मेहरबानी करें ताकि तंजीमी कारकर्दगी अमल में आ सके।

वकील अमहद मन्सूरी
उद्यम सिंह नगर (उत्तराखंड)

अस्सलामोअलैकुम, अल्लाह पाक सदर उत्तर प्रदेश आली जनाब अनीस साहब और जनाब नबी बख्श मन्सूरी सम्पादक मन्सूरी पैग़ाम को अमन व सलामती में रखे और मन्सूरी पैग़ाम को मंजिलों की ऊंचाइयों पर पहुंचाएं। साथ ही केंद्र में बसपा की सरकार बने और बहन मायावती भारत की प्रधानमंत्री बने मैं इसके लिये दुआ करता हूं।
हमें अफसोस हैं कि ४ अप्रैल के विशाल मन्सूरी समाज शादी सम्मेलन में आप हजरात न आ सके। मैं आपकी मजबूरियों को समझता हूं। अल्लाह आप को आपके नेक मकसद में कामयाब करें।

हाजी आर.के. मन्सूरी
स्वतंत्रता सेनानी, नगर बोड़ा
जिला राजगढ़ ब्यारा, म.प्र.

जनाब अस्सलामोअलैकुम, मंसूरी समाज के लिए आपकी कोशिश दिन ब दिन रंग ला रही है। **मंसूरी पैग़ाम** में पिछले अंक में टीपू सुल्तान डे के बारे में पढ़कर काफी जानकारी हासिल हुई है। इस्लाम के नये साल के लिए पूरी टीम को मुबारक बाद देता हूं। उम्मीद करता हूं कि आगे भी मंसूरी समाज को ले जाने के लिए कोशिश होती रहेगी। अल्लाह आपको आपके मकसद में कामयाब करे।

सलीम मंसूरी, लहरियापुरा, उरई **(जालौन)**

Scanned with OKEN Scanner

स्टेज पर बाये से हाजी अन्जुम अली मन्सूरी, हाजी शरीफ मन्सूरी, अनीस मन्सूरी, एम.एच. शेख मन्सूरी, सेठ अब्दुल जलील मन्सूरी, अब्दूल लतीफ मन्सूरी 'आरको'

मन्सूरी समाज जागा अपने अधिकार के लिए

मन्सूरी अधिकार सम्मेलन में उमड़ा लगभग 60 हजार मन्सूरी ब्रदर्श ने हाथ उठा कर अनीस मन्सूरी की आवाज पर लब्बेक कहा और अपना कौमी रहनुमा तसलीम करते हुए ब0स0पा0 सरकार से अपनी उम्मीदे बावस्ता की।

लखनऊ 29 मार्च 2009, ऑल इण्डिया मन्सूरी समाज के बुलावे पर बलरामपुर गार्डेन, अशोक मार्ग, लखनऊ के वसीमैदान में उत्तर प्रदेश से ही नही बल्की मुल्क और बेरूनी मुल्क से लगभग 60 हजार मन्सूरी समाज के हमदर्दो और रहनुमाओं ने सैकड़ो की तादाद बसों, रेलों और हवाई सफर के जरियो शिर्कत कर जल्से को रोनक बक्सी। पहली बार लखनऊ की सरजमीं पर इतनी बड़ी तादाद में सिर्फ मन्सूर बिरादरी इकट्ठी हुई, साथ ही पहली बार पर्दानसीन मन्सूरी समाज की मस्तूरात जमा हुई जो अपने में मन्सूरी समाज की तवारीख बनी। जल्से में आया ये जनसैलाब आजादी के बाद से ही अपने हुकुक के लिये सभी सियासी पार्टीयों के लिए सिर्फ वोट बैंक बन कर रह गया था। उसी मन्सूरी समाज के लोगों के सब्र का अब बांध टूट गया है। जिसका नजारा बलरामपुर गार्डेन में देखा गया।

Scanned with OKEN Scanner

जल्से का आगाज तिलावत-ए-कुराने पाक और नन्ही दो बच्चियों, बलिया फातिमा मन्सूरी और रुक्सा हानी मन्सूरी के दर्स-ए-हदीश से शुरु हुआ। इस प्रोग्राम को बड़ी

हाजी शरीफ मन्सूरी संयोजक ने अपने खिताब में कहां कि सभी सियासी पार्टीयों में ऊची जाति के मुस्लिम नेताओं नें पिछड़ी जाति के मुसलमानों के लिए कोई योजनायें भी नही बनाई और न ही कोई काम उनकी तरक्की के लिए किया। इन नेताओं को अब ये बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि मन्सूरी बिरादरी के लोग उनके बेहकावे में अब आने वाले नही है। इस चुनाव में हम अपने बैलेट पावर से राजनीतिक दलों को अपनी ताकत का ऐहसास करा देंगे।

मक्बूलियत मिली, जल्से के मेहमान-ए-खुसुसी आली जनाब एम0 एच0 शेख मन्सूरी साबिक नायब कमिशनर बम्बई और सदारत का ओहदा सभाला तंजीम के सदर आली जनाब अनीस मन्सूरी लखनऊ। निजामत का हक अदा किया जनाब अंजुम अली मन्सूरी और जनाब सरताज मन्सूरी ने।

सदर अनीस मन्सूरी ने मन्सूरी समाज के जनसैलाब को खिताब करते हुए कहां कि जब तक मन्सूरी समाज एक जूट होकर अपनी हुकूक की मांग नही करेगा। तब तक समाज को कोई सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक हुकूक मिलने वाला नही, क्योंकि 14 प्रतिशत् अशराफ कहे जाने वाले मुसलमानों ने 86 प्रतिशत् पसमांदा मुसलमानों के हुकूक छीन रखे है। ये तमाम सियासी पार्टीयों को घेर कर बैठे है और कमजोर मुसलमानों के अधिकार की बात न शासन तक पहुंचती है और न ही सत्ता तक। मन्सूरी साहब ने आगे कहा कि मुसलमानों में 34 बिरादरीया हैं जिनमें लगभग 28 पिछड़े वर्ग की है। मुस्लिम समाज की कुल आबादी 86 प्रतिशत् पिछड़े समाज से है जिसमें करीब 30 प्रतिशत मन्सूरी समाज शामिल है। हकीकत में सच्चर कमेटी की रिर्पोट इन्हीं पसमादा मुसलमानों की रोजी-रोटी और सामाजिक

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. परवेज अख्तर मन्सूरी, पटना, बिहार

सेठ अब्दुल जलील मन्सूरी, मुम्बई

हालात का जिक्र करती हैं ऐसे हालात में जब पिछड़े वर्ग के कमजोर लोग अशराफ से अलग अपनी एक जुटता और अधिकार की बात करते है तब अगड़ी जाति वाले मुसलमान मजहब की दुहाई देकर कहना शुरू कर देते है कि पिछड़ा वर्ग मुसलमानों को बाटने का काम कर रहा है।

सदर अनीस मन्सूरी ने आगे कहा कि हम से कम आबादी वाली अनेक जातियां समय-समय पर एक जुट होकर अपनी ताकत दिखा कर सभी तरह के अधिकारों को हासिल करने में कामयाब रहे हैं और हो जाते हैं। मुसलमानों में 30 प्रतिशत् आबादी वाला मन्सूरी समाज को कोई भी सियासी पार्टी समाज के नाम पर एक टिकट भी नही देती है जब की लोकसभा और विधान सभा में कई क्षेत्र ऐसे है जिनमें मन्सूरी समाज की तादाद इतनी ज्यादा है कि उनके वोट के बगैर कोई प्रत्याशी जीत ही नही सकता। वैसे तो मन्सूरी बिरादरी की कई तन्जीमें बरसों से समाज में काम कर रही थी। लेकिन मैने समाज के छोटे-छोटे इलाको व कस्बों को मुत्तहद करने का काम किया और सालों की मेहनत के बाद आज कामयाबी की मंजिल देख रहा हूँ। हमारी आवाज पर अपने हुकूक और इज्जत पाने के खातिर बिरादरी नें लखनऊ आकर अपनी ताकत का मजाहरा किया और एक बैनर तले जमा होकर आपने हक की मांग की।

अब्दुल लतीफ मन्सूरी 'आर्को', जयपुर

मेहमान-ए-खुसूसी जनाब एम0 एच0 शेख मन्सूरी साहब ने कहा कि समाज की इस्तेमायुयत के बाद सबसे बड़ा काम तालिम का है। जिसमें लड़के और लड़कियों दोनों की तालिम जरूरी है। तालिम के बगैर समाज तमाम हुकूक पाने में नकामयाब रहेगा। मुझे उम्मीद है कि अनीस मन्सूरी ऐसे नौजवान मन्सूरी समाज की तरकक़ी के तमाम रास्ते खोलने में कामयाब रहेगे।

मेहमान-ए-ऐजाज़ी जनाब डा0 परवेज मन्सूरी मघेपुरा, पटना बिहार जो एक अच्छे सर्जन और कौमी दर्द रखने वाले रेहनुमा है उन्होने अपने खिताब में कहां कि बिरादरान-ए-मन्सूर किसी भी सियासी पार्टी से ताल्लुक रखती हो लेकिन है समाज की एक कड़ी, सेहतमन्द समाज उस वक्त तक बजूद में नही आ सकता जब तक उसकी जमहूरी बुनियादे मजबूत न हो। जनाब अनीस मन्सूरी ने मन्सूरी समाज के लिए जो बुनियाद रखी है वह मजबूत और कबिले तारीफ है दूसरी बात ये है कि यहां पर मन्सूरी समाज की पर्दा नसीन महिलाओं की बेदारी को देख कर ऐसा लगा कि जिस समाज में मस्तूरात बेदार हो जाती है उस समाज को कोई पिछे नही ढकेल सकता क्योकि माँ की गोद से ही बच्चे को इस्तेमायुयत और सामाजिक बेदारी की तालिम मिलती है भला वो समाज कैसे पीछे रहे सकता है।

आपने आगे कहां कि मेरा पटना बिहार से लखनऊ आना कामयाब हो गया क्योंकि यहां कि तन्जीमी कारकर्दगी और इतिहासिक भीड़ की बेदारी नें हमारा दिल जीत लिया, में अल्लाह से दुआ करता हूँ कि कौमे मन्सूर अपने रहनुमा जनाब अनीस मन्सूरी की रहनुमाई में तरक्की की मंजिलें तय करें।

तकरीर में हिस्सा लेने वालों में समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सेठ अब्दुल जलील मन्सूरी बम्बई, राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष अब्दुल लतीफ मन्सूरी आर्को और जनाब मुख्तार मन्सूरी, आंवला, बरेली। सम्मेलन में प्रदेश के सभी ब्लाक, तहसील, जिला और मण्डलों के आहदेदारान मौजूद थे।

मुख्तार मन्सूरी, आंवला, बरेली

हाजी अन्जुम अली मन्सूरी, बरेली

Scanned with OKEN Scanner

मुख्य आर्कषण का केन्द्र

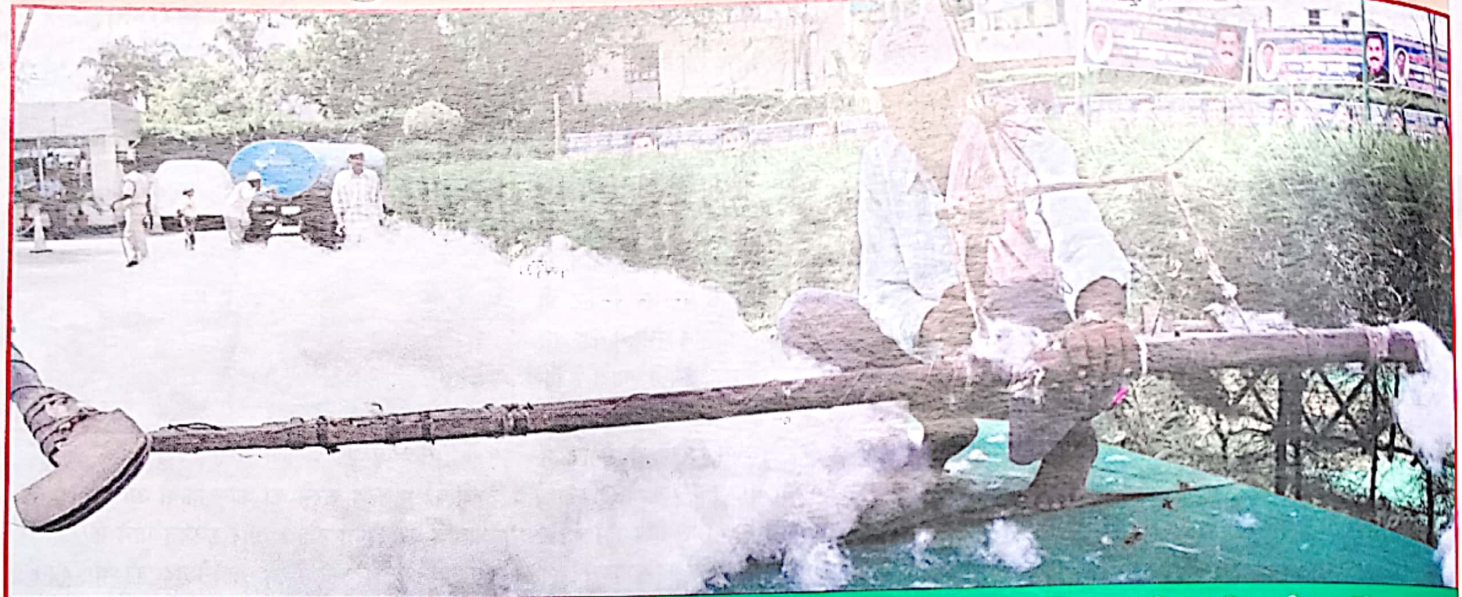

मन्सूरी समाज का आवाई पेशा रूई की धुनाई को खास आकर्षक का केन्द्र बनाया गया, धुनिया मजदूर रूई धुनते हुए अपने सामाजिक और आर्थिक हालात का बयां कर रहा है। धुनाई में उसी प्रारम्भिक मशीन (पींजन) का इस्तेमाल किया जा रहा था। जिसने सारी दुनिया को कम्पन का सिद्धान्त दिया, आज कि तमाम टेक्नालाजी इसी कम्पन के सिद्धान्त का आधार है।

मुबारकबाद के मुस्तहक़

ऑल इण्डिया मन्सूरी समाज के अधिकार सम्मेलन में प्रदेश भर से आये हजारों कार्यकर्ताओं और रहनुमाओं ने लखनऊ की तहजीब का एहतराम करते हुए अमन और सुकून के साथ आने-जाने, खाने-पीने, और उठने-बैठने में जो सलीका अख्तियार किया हकीकत में वे सभी हजरात मुबारक बाद के हकदार है।

Scanned with OKEN Scanner

दूसरे मुबारकबाद के हकदार इंतजामियां के वे हजरात है जिन्होने ट्रैफिक और अमन को बनाये रखने में तन्जीम का साथ दिया। वैसे तो अंदाजे से ज्यादा भीड़ के आ जाने की वजह से राजधानी के खास-खास जगहों और रास्तों पर जबरदस्त जाम के हालात पैदा हो गयें क्योंकि दोपहर तक बलरामपुर गार्डेन भीड़ के लिए छोटा पड़ गया। वहा तिल रखने की जगह नही थी देर से आये हुए हजरात अन्दर नही जा पा रहे थें। इस लिए अशोक मार्ग पर ही खड़े होकर सुनने लगे जिससे रास्ता जाम हो गया। लगभग शाम 4 बजे सम्मेलन के इख्तिताम पर एक साथ भीड़ रास्ते पर आ गयी। जिससे चारबाग, हुसैनगंज, हजरतगंज, अशोक मार्ग एवं निशातगंज पूरी तरह से जाम हो गये।

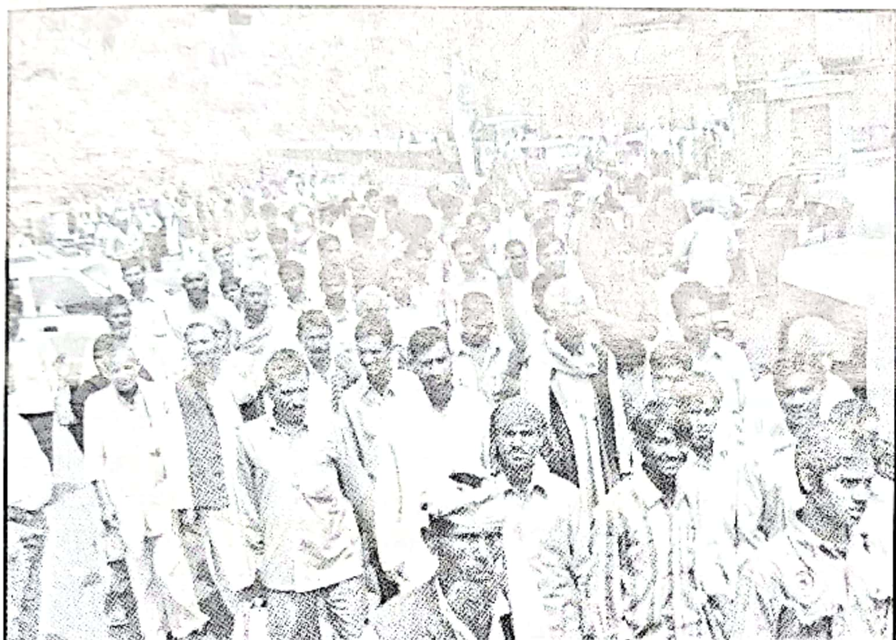

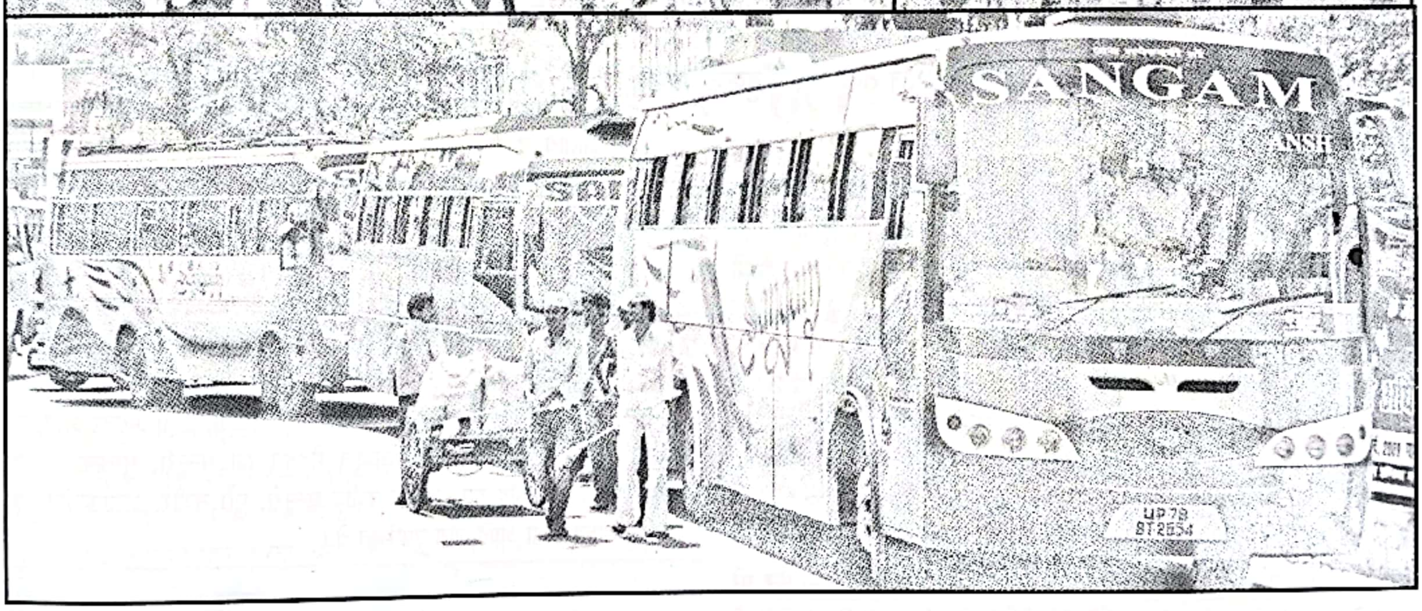

बाहर से आयी हुई बसों को लक्ष्मण मेंला मैदान में खड़ा करने की जगह मुकर्रर की गयी थी। जब वहा जगह कम हो गयी तो तमाम बसों को ट्रैफिक पुलिस नें शहर के बाहर रिंग रोड, कानपुर रोड़ और टीले वाली मस्जीद पर भेज कर राहत की सांस ली। जिससे लोगों को गार्डेन तक पहुचने में मुश्किलात का सामना करना पड़ा। इन तमाम परेशानियों के बाद भी अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है कि कोई हादसा नही हुआ सिर्फ उन्नाव वापस जाने वाली बस एक खड में गिर गई, जनाब शानू मन्सूरी जिला सदर के सूझ-बूझ से बड़ा हादसा टल गया, जनाब शानू मन्सूरी और उनकी तनजीम ने घायल हुए हजरात के घरों पर जाकर हाल-चाल पूछा और आर्थिक मदद की। सभी जिलों और बाहर से आये हुये लोग खुशी-खुशी इस एतिहासीक सम्मेलन को दिल में समाये घर वापस हुए।

Scanned with OKEN Scanner

शफ़ीउद्दीन मन्सूरी (जिलाअध्यक्ष आल इण्डिया मन्सूरी समाज, मैनपुरी) जनाब अनीस मन्सूरी का इस्तेकबाल करते हुए

सर्वमान लीडर की कमी से

समाज पिछड़ा

आज के हालात में सभी सामाजिक संगठन अपने अधिकारों के लिए प्रयासरत है यहां तक कि यादव और दलित समाज उ.प्र. में सरकार बनाने में कामयाबी हासिल कर चुके हैं लेकिन पिछड़ा मुसलमान आज तक अपना हुकूक हासिल करने में नाकामयाब रहा है।

मैनपुरी 5 मार्च उक्त उद्‌गार मन्सूरी समाज सम्मेलन को खिताब करते हुए। समाज के प्रदेश अध्यक्ष अनीस मन्सूरी ने मुकामी आगरा रोड, चुन्ना हाता में कहा कि मुसलमानों मे मन्सूरी समाज लगभग 30 प्रतिशत से ज्यादा है जो सियासी, तालिमी और आर्थिक तौर पर पिछड़ा है। अब जरूरत इस बात की है कि हम संगठीत हों और कौमी बेदारी का सबूत पेश करते हुए खास तौर से सियासत में हिस्सेदारी के लिए कोशिश करे। जनाब मन्सूरी साहब ने बताया कि 29 मार्च 2009 को लखनऊ मन्सूरी अधिकार सम्मेलन सम्पन्न होने जा रहा है जिसमें समाज की भागेदारी ज्यादा से ज्यादा हो ताकी कौमी रहबरो के ख्याल को सुने क्योकि सम्मेलन में कुछ कीमती फैसले लिये जायेगें। उन्होने बताया कि मन्सूरी समाज पिछड़े वर्ग में आता है। इसकी सही लीडरशिप न होने की वजह से ये समाज आर्थिक और शौक्षिक रूप से पिछड़ गया हैं उत्तर प्रदेश में समाज की आबादी 1.60 करोड है और पूरे मुल्क में 7 करोड है इतनी बडी आवादी होने के बावजूद भी हमारी गिनती सियासी दलो में कही नही है हमारी लड़ाई सभी सियासी दलों से है जो संख्या के हिसाब से हिस्सेदारी नही देते।

मुस्लिम नेताओं ने कभी भी शासन/सत्ता को मन्सूरी समाज की संख्या के बारे में बाताया ही नहीं जिससे हम लगातार तरक्की से मेहरुम हो गये। आजादी के बाद

मैनपुरी जिला सम्मेलन को कामयाब बनाने में जमालुद्दीन मन्सूरी, शफीउद्दीन मन्सूरी और जलालुद्दीन मन्सूरी ने अपने साथियों के साथ पूरी तरह से अपनी जी-जान लगा दी।

कांग्रेस सरकार ने अन्सारी समाज को बुनकर आयोग देकर तरक्की के रास्ते खोल दिये जबकी बडी तादाद वाले मन्सूरी समाज के लिए धुनकर आयोग नही बनाया गया। ये हमारे मन्सूरी समाज के साथ घोखा है।

सम्मेलन को प्रदेश महामंत्री अन्जुम अली मन्सूरी ने सम्बाधित करते हुए कहा कि मन्सूरी समाज को इक्ट्ठा करने की हमें जरूरत क्यों पड़ी। क्योंकि हम मन्सूरी समाज को उसकी ताकत का एहसास दिलाने का काम कर रहे है। हम विधान सभा के चुनाव के बाद से ही एक दिन भी चैन से नही बैठे और पच्छिम के कई जिलो में हमने जाकर मन्सूरी समाज को एक धागे मे बाधने का काम किया है। हम और हमारे नेता अकेले विधान सभा जाना नही पसंद करेगे। कौमी बेदारी के लिए कितना भी समय क्यो न लग जाये। हमारा प्रयास यही है कि हम इस पिछडे समाज को उसका हक दिलाकर रहेगे। जनाब मन्सूरी साहब ने आगे कहां कि जिसके अन्दर अल्लाह का डर है वे किसी से नही डरते, समाज अपने हक के लिए घरों से निकल कर इंकलाब की आवाज बुलंद करेगा। मन्सूरी समाज अपने नाम के साथ मन्सूरी जरूर लिखे, कोई सैयद कोई पठान लिखता है तो आप लोग क्या शरमाते है। कांफ्रेंस की सदारत हाजी इदरीस मन्सूरी ने की कार्यक्रम के आखिर में मन्सूरी समाज के छात्र छात्राओं को प्रथम श्रेणी में हाई स्कूल पास करने पर समाज की ओर से गिफ्ट देकर सम्मनित किया गया। वहीं समाज नें हाजी अब्दुल सकूर, हाजी अब्दुल रहमान, हाजी मो0 इदरीज, हज्जन मुनीरन बेगम, हाजी मग्गू खां को मुख्य अतिथि ने साल उढ़ा कर स्वागत किया साथ ही कारगिल में शहीद अमरूदीन की विधवा मोमिना बेगम व दीन मोहम्मद दीन को भी शाल पहनाकर सम्मनित किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में शफीउद्दीन मन्सूरी ने सभी कस्वो व ग्रामीण अंचलों से आये उन तमाम मन्सूरी समाज के लोगों का शुक्रिया अदा किया और कहा कि समाज इस भ्रम में न रहे कि इस समाज का राजनैतिक दल से कोई संबंध है। ये कमेटी पूरी तरह से गैर राजनैतिक हैं। इसका किसी भी राजनैतिक दल से कोई लेना-देना नही है। सम्मेलन में हाजी अब्दुल मन्नान मन्सूरी, जिलाध्यक्ष इटावा, हाजी अख्तर अली, मु0 इदरीश सभासद बिलकीस बेगम, अब्दुल मेहवूब खां मन्सूरी, मुस्ताक अहमद, अख्तियार अली, रशीद खां, अब्दुल रशीद मन्सूरी, मु0 नजीर, अलाउद्दीन, मु0 वसीम शराफत अली आदि लोग उपस्थित थे।

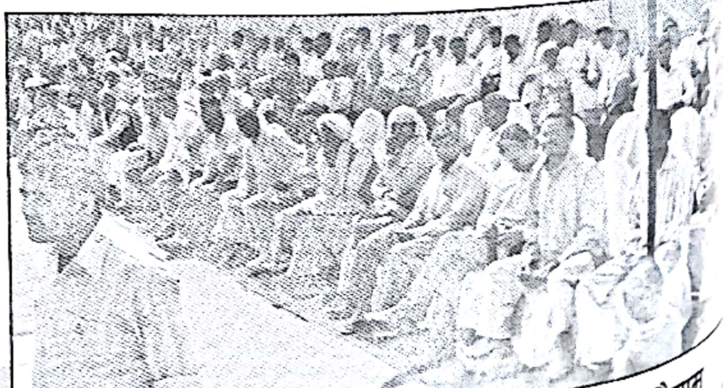

Scanned with OKEN Scanner

प्रदेश अध्यक्ष के साथ बरेली मंडल अध्यक्ष सरताज मन्सूरी (बायें) एवं इरशाद मन्सूरी, मंडल अध्यक्ष, मुरादाबाद

आर्थिक मसायल का हल धुनकर आयोग

मन्सूरी समाज की जेबी तंजीमों के रहनुमाओं ने अपना उल्लू सीधा कर समाज को पीछे धकेला, आजादी के बाद 33 प्रतिशत नौकरियों वाला मुस्लिम समाज आज $1^1/_2$ प्रतिशत पर आ गया है। पेट की आग बुझाने और बच्चों को पालने के लिये मन्सूरी समाज छोटे–छोटे काम करने के लिय मजबूर है।

बरेली-आवला- 14-02-09 सुभाष इन्टर कालेज के वसी और खुले मैदान में 15 हजार मन्सूरी समाज को खिताब करते हुए मेहमान-ए-खुसूसी आली जनाब अनीस मन्सूरी सदर ऑल इण्डिया मन्सूरी समाज उत्तर प्रदेश लखनऊ ने कहा कि मन्सूरी समाज (धुनकर समाज) जिसे बहना, धुना, नद्दाफ, पिंजार, हिल्लाज, कतान यहां तक की 53 नामों से पुकारा जाता है। इस समाज का आबाई पेशा रूई को साफ करना, धुन्ना, लिहाफ, गद्दे, तोशक, तकिया और सूत तैयार करना था।

आजादी से पहले यह बिरादरी एक सम्पन्न समाज था ज्यादातर शहरों, कस्बों और गांवों में एक जगह इकट्ठा होकर अपना रोजगार (पेशा) से जिन्दगी गुजारतें थे। इस समाज के जरिये तैयार की गई वस्तुओं का इस्तेमाल दो तरह से होता था, रजाई, गद्दे और तकिये जो समाज का धनी वर्ग नवाब, राजा, महाराजा और बड़े लोग इस्तेमाल करते थे जिससे आमदनी और समाज में काफी इज्जत थी। दूसरी तरफ से इस समाज के जरियें तैयार किया गया सूत से बुनकर मजदूर कपड़ा बनाने का काम करता था। अंग्रेजों के पहले कपड़े का उद्योग एक महत्वपूर्ण व्यवसाय माना जाता था उस वक्त देश में मशीनों का निर्माण न होने की वजह से धुनकर मजदूरों द्वारा तैयार किये गये धागा (सूत) पर ही कपड़े का व्यवसाय निर्भर करता था। आजादी के बाद इंग्लैण्ड से आया हुआ कपड़ा महगा होने की वजह से खपत मुल्क में कम थी। अंग्रेजो का कपड़ा व्यवसाय रोज व रोज घाटे में जा रहा था और टप पड़ने की कगार पर था। अंग्रेजों ने हिन्दुस्तानी कपड़ो के व्यवसाय को समाप्त करने के लिये कई चाले चली ताकि बाहर से आया हुआ माल बाजार में आसनी से बिक सके। इसके लिये अंग्रेजो ने घुनकर मजदूरों, पिजारों पर जागीदारों और अंग्रेजी सिपाहियों के जरियें जुल्म करना शुरू कर दिया। ऐसी हालत में पिंजारों के चर्खे

Scanned with OKEN Scanner

बरेली

और धुनाई की पीजन नष्ट किये गये और महीन सूत बनाने वाले कारीगरों के अंगूठे काट लिये गये इस तरह इस बिरादरी पर बेहद जुल्म किये गये। साथ ही तैयार सूत को बहुत कम कीमत पर जबरदस्ती ले लिया जाता था जिससे यह बिरादरी गरीबी और भूखमरी का शिकार बन गई और अपना पेशा बन्द करके तरह-तरह की मजदूरी से पेट पालने लगा। अंग्रेजों और जमीदारों के बढ़तें हुए जुल्म और नाजायज वसूली की वजह से बिरादरी अपनी बस्तियों और घरों को छोड़कर भागने पर मजबूर हो गयी। डर की सीमा यहां तक बढ़ी कि नये स्थानों पर वे अपनी जात की पहचान भी दूसरे सरनेम लगाकर बताने लगे, यही वजह रही कि मन्सूरी समाज 53 नामों से पुकारा जाने लगा।

देश आजाद होने से पहले अंग्रेजी जनगणना के आधार पर इस विरादरी की आबादी केवल उत्तर प्रदेश में 8.50 लाख थी जो कुल मुस्लिम आबादी की 9 प्रतिशत थी लेकिन मन्सूरी बिरादरी अपनी उपजात न लिखकर छुपने लगी। ऐसा लगने लगा कि बिरादरी विलुप्त (खत्म) हो जायेगी। इन हालात को देख कर आली जनाब अलहाज अब्दुल शकूर साहब औरंगाबादी (बिहार) ने एक कौमी तहरीक को जन्म दिया और इस तहरीक का पहला इजलास सन् 1938 इलाहाबाद में आली जनाब अलहाज मौलाना अब्दुल वहीद साहब अशरफी इलाहाबादी की जेरे क्यादत मुनक्किद हुआ। इसके बाद कुलहिन्द इजलास सन् 1940 लखनऊ में मुनक्किद हुआ। ये दोनो इजलास बुजुर्ग रहनुमा अलहाज अब्दुल शकूर साहब औरंगाबादी के जलीलुल कदर फरजन्द जनाब मौलाना अब्दुल वदूद साहब एम0 ए0, एल0एल0बी, एडवोकेट की सदारती रहनुमाई में मुनक्किद हुआ और पूरे मुल्क में फैली हुई मन्सूरी बिरादरी को इक्ट्ठा करके उसे मन्सूरी लकब से नवाजा गया। जनाब मुनीर बख्श मन्सूरी जालौनवी 1938 में इलाहाबाद, इज्लास में शरीक होने के बाद जब वतन वापस आये तो आप कौमी जज्बात से लबरेज़ थे, वतन आते है मन्सूरी समाज में बेदारी की रूह फूंकनी शुरू कर दी। इस के अच्छे नताएज एक साल की लगातार मेहनत के बाद सामने आना शुरू हो गये 23 अक्टूबर सन् 1939 को जनाब मन्सूरी साहब ने जिला जालौन उत्तर प्रदेश में बिरादरी का एक संगठन खड़ा कर धुनकर समाज के शोषण के खिलाफ आवाज बुलन्द की सरकारी अफसर और दबंग धुनकर समाज से बेगार लिया करते थे, काम के बदले मजदूरी नहीं देते थें। इसके लिये मन्सूरी साहब ने "जितना काम उतनी मजदूरी" का नारा बुलंद किया और समाज को संगठित कर उनमें हौसला पैदा किया।

आजादी के बाद सरकार ने बुनकरों के लिए बुनकर आयोग बनाकर उनकी हालत को सुधारने का काम तो किया लेकिन धुनकरों की तरफ कोई गौरो फिक्र नहीं की वर्तमान सरकारों ने स्वर्णकारों को विशेष प्रकार की छात्रवृति मल्लाहों के लिये घाट, कुम्हारों के लिए मिट्टी की जगह और सहयोग देकर इनकी आर्थिक व सामाजिक दशा सुधारने में मदद की लेकिन धुनकर मजदूर जिसके ऊपर अंग्रेजी जुल्म भी हुए कारोबार भी खत्म हुए, मकान और जमीने छोड़कर भागना पड़ा कोड़े सहारा नहीं मिला।

आर0के0 शर्मा विधायक आवला ने मन्सूरी समाज को खिताब करते हुए कहा कि हम कोई सियासी बात नही करते हम तो भाईचारे की बात करते है। हम यहां आपके परिवार के सदस्य की हैसियत से बैठा हूँ। मन्सूरी समाज के किसी उत्पीडन को मै बरदास्त नही करूंगा चाहे पुलिस का ही उत्पीडन क्यों न हो। विधायक क्षेत्र का नुमांयदा होता है। उसकी जिम्मेदारी बनती है कि अवाम की हिफाजत करे वोट देने या न देने का फर्क नही करते, में मन्सूरी समाज से बेहद मुताअस्सिर हूँ। जहां भी आपको जरूरत पड़े मेरे दरवाजे हमेशा आपके लिये खुले है।

आली जनाब मुख्तार मन्सूरी ने अवाम को खिताब करते हुए कहा कि मन्सूरी समाज आजादी के बाद से लगातार सभी सियासी पार्टीयों को बदल-बदल कर अपना वोट इस उम्मीद पर देता रहा कि शायद अगली हुकूमत हमारे हालात को समझेगी और अगली हुकूमत में मेरा हक हासिल हो जायेगा। लेकिन किसी भी हुकूमत ने हमारा हक देना तो दूर रहा दुख दर्द तक नही पूछा। समाज ने अपना वक्त और गाढ़ी कमाई का पैसा भी खर्च किया लेकिन अब हम थक चूके है और दूसरों पर भरोसा भी नही रहा आज हमारे बीच बिरादरी का रहनुमा जनाब अनीस मन्सूरी मौजूद है हम तमाम बिरादरी की तरफ से जनाब मन्सूरी साहब को यकीन दिलाते हैं कि पूरी कौम आपकी आवाज पर लब्बैक का नारा बुलन्द करेगी। आज तक तमाम सियासी दलों ने हमारा जमकर शोषण किया और सियासत में जिम्मेदारी का वायदा भी किया हिस्सेदारी तो दूर रही संगठन के करीव तक नहीं आने दिया सिर्फ फर्स उठाने तक ही हमें समझ गया। मन्सूरी साहब ने आगे कहा कि मुझे हुकूमत में आने कि कोई तमन्ना नही है मैं जब तक जिंदा रहूंगा कौम की गुलामी में अपना सरमाया और वक्त लगाऊंगा। आज अनीस मन्सूरी की शक्ल में जो रहनुमा हमें मिला है। उसके पसीने की एक-एक बूंद से कौम परस्ती की खुशबू आ रही है।

उ0 प्र0 सदर की इस्तेकवालिया रैली का आगाज बरेली होटल से शुरू हुआ लगभग 50 किलोमीटर के लम्बे फासले में जगह-जगह इस्तेकबाल, कार्नर मीटींग और गुलपोशी के बाद रैली में अपनी चार पहिये वाहन के साथ लोग शरीक होते गये। आंवला पहुंचने तक लगभग 165 गाडियों की ऐसी रैली पहले कभी इलाके के लोगों ने देखी नहीं थी। जैसा इस्तेकबाल ऑल इण्डिया मन्सूरी समाज के सदर अनीस मन्सूरी लखनऊ का हुआ।

तकरीर में हिस्सा लेने वालों में जनाब डा0 फाजिल मन्सूरी शाहदाना बरेली, जनाब शमीर अहमद मन्सूरी देहलवी, हाजी गुफरान मन्सूरी, सरताज मन्सूरी, शाहजहांपुर, अंजुम अली 'एडवोकेट', मुईन भाई, मेहदी हसन मन्सूरी, जनाब अलानूर मन्सूरी, अलताफ भाई, रईस मियां, वसारतगंज।

Scanned with OKEN Scanner

दिल्ली जाने के लिए गांव से गुजरना होगा

> पिछली तंजीमें शहरों तक महदूद, अवाम एहसास–ए–कमतरी का शिकार, अपनी पहचान बनाने में नाकाम, सर्वमान्य कौमी रहनुमा की कमी की वजह से समाज को सियासी पार्टीयों ने ठगा।

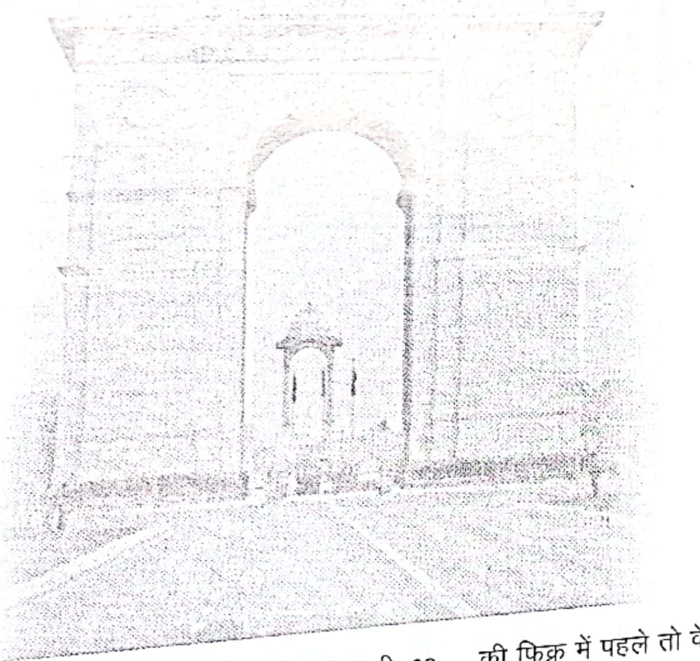

मुरादाबाद– कोटद्वारा 15 फरवरी 09 जल्से की शुरुआत तिलावत–ए–कलामपाक और नात–ए–नवी से हुई। जल्से की सदारत की जिम्मेदारी सम्भाली जनाब शेर मोहम्मद मन्सूरी प्रधान फरीदपुर ने निजामत का हक अदा किया जनाब इरशाद मन्सूरी और मेहमान–ए–खुसूसी के मंसब पर फाइज रहे आली जनाब अनीस मन्सूरी सदर आल इण्डिया मंसूरी समाज (शेर–ए–उत्तर प्रदेश लखनऊ)

अवाम को खिताब करते हुए मेहमान–ए–खुसूसी अनीस मन्सूरी ने कहा कि मन्सूरी समाज की तंजीमी कारगुजारी लगभग 60 साल से चल रही है लेकिन देखने में आता है कि हम जहां से चले थे उसी के दो कदम आगे या पीछे खड़े है। इसकी वजह तजीमों की कारकर्दगीं शहरों और गेस्ट हाउस तक की महदूद होकर रह गई। गांव जहां मन्सूरी बसता हैं, उसे इस बात की खबर ही नही मिली कि किसी को अल्लाह ने हमारी रहबरी के लिये भेजा है। यही वजह रही कि मन्सूरी अल्फाज़ आम नही हो सका। शहर का पढ़ा लिखा तब्का अपने को छुपाने के लिए तरह–तरह के अलकाब ढूढ़ता रहा। उन्हें बिरादरी की खबर तब आई जब उनके बच्चे शादी लायक हो गये। उनके निकाह की फिक्र में पहले तो वे अशराफ खानदानों के चक्कर लगाते रहे नाउम्मीद होकर बिरादरी की तरफ मुड़ना पड़ा। वैसे तो अशराफ मुसलमान लड़के तो ले लेते है जब लड़कियों की बारी आती है तो जांच पड़ताल खानदान और कबीले की पहचान शुरू हो जाती है। इस वजह से यह मन्सूरी समाज आर्थिक सामाजिक तौर से पिछड़ता चला गया। इंफिरादियत का बोलवाला होने की वजह से हम सरकारें बनाते और बिगाड़ते चले आये लेकिन इज्तेमाय्यत की कमी की वजह से अपनी पहचान बनाने में नकामयाब रहे और दूसरों के पीछे दुम हिलाते रहे। अंसारी बिरादरी अपना जात सूचक शब्द अंसारी लिखता रहा उससे उसकी पहचान बनी और वे सरकार में हिस्सेदारी कायम करने में कामयाब हुए।

मन्सूरी समाज के पास कोई मज़बूत कारोबार या खेती नहीं है। इस वजह से आर्थिक स्थिति खराब होती चली गई इसका सीधा असर हमारी तालीम पर पड़ा हम अच्छी तालीम से मेहरूम हो गये, इसका फायदा अशराफ ने बड़ी चालाकी से उठाया और हमें एहसास–ए–कमतरी का शिकार बनाकर रख दिया। हमारे नाम बिगाड़े बहननपुरवा, धुनों की मस्जिद और धुना चौक वगैरह।

कारोबार का मशीनीकरण हो जाने की वजह से हमारी दस्तकारी खत्म हो गई धागा और रुई का काम बन्द हो गया। कौमी लीडर अपनी नेतागिरी चमकाने के चक्कर में मकान, दुकान, थाना और अदालत में उलझकर समाज के काम में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। सभी सियासी दल हमें ठगते रहें अब वक्त की मांग है कि सब इकट्ठा हो जाओं और एक नेता की आवाज पर लब्बेक कहों तो सियासत में भी आपकी पहचान होगी। अभी तक हमारे भाई जो सियासत में आगे बढ़ें दूसरों ने उसके मुकाबले में दूसरे भाई को खड़ा कर दिया दोनों बर्बाद हों गयें क्योंकि जिस घर में मुखिया की बात नहीं मानी जाती है वो घर बरबाद हो जाता है। आपकी बात कौन करेगा आखिर आपकों एक का तो होना ही पड़ेगा। अपनी बीबी अपने बच्चे तो सभी देखते हैं समाज की फिक्र करनी होगी संगठन खड़ा कर उसे मजबूती देना होगी तभी सियासत में आप हलचल मचा कर अपनी बात सरकार को सुनाने पर मजबूर कर सकते है।

आज के वक्त में सबसे एहम रोल मीडिया का है। मीडिया को दोस्त बनाओगे तो वे आपकी आवाज को सरकार तक भेजने में आपकी मदद करेंगे। आज के जमाने में हर आदमी इज्जत चाहता है। उन्हें बइज्जत अपनी

महफिलों में बुलाओं उन्हें इज्जत देकर बिठाओं उनके खानपान का ख्याल रखों वे तुम्हारें दोस्त होंगे और मदद करेंगे। हमारी आपकीं समस्याओं को सरकार तक पहुँचाने में मदद करेंगे। क्योंकि ''अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता''। अगर कुछ चाहते हो तो कुर्बानी देने के लिए तैयार हो जाओं याद रखों जो दिखता है वही बिकता है।

नफीस मन्सूरी एडवोकेट बिजनौरी ने कहा कि एक ही लम्हें में तारीख बदलती है और एक ही लम्हा अहम होता है मुबारकबाद दीजिये कि अनीस मन्सूरी के इन लम्हों ने खाली पड़े नकसों में रंग भरने का काम किया है। बहुत देर से सही लेकिन सही वक्त पर आपकों जगाया जा चुका है। अल्लाह ने फरमाया है कि, जगाने वाले के लिये एक आवाज काफी है मुर्दो को जगाने के लिये सूरः फील का इंतजार करों आप में अब सियासी बेदारी की जरूरत है। मुझे बी०एस०पी० ने महासचिव बनाया, मेरा विरोध करने वाले शेख अशराफ मुसलमान थे। किसी बतनी भाई ने मेरी खिलाफत नही की, फिर भी मुझे कामयाबी मिली। आज मन्सूरी समाज में एकता की बहुत जरूरत है। मन्सूरी समाज ने कभी किसी की टांग खींचने का काम नहीं किया। आपसी टांग खींच की बदौलत आज मुस्लिम समाज की जो दुर्दशा हो रही है किसी से छुपी नहीं है हम 30 प्रतिशत से 1$^1/_2$ प्रतिशत पर आ गये है। हम सब एक अल्लाह के मानने वाले है एक ही सफ में नमाज अदा करते हैं। फिर भी नफरत क्यों?मन्सूरी समाज की तालीमी और सियासी ताकत बननें की सख्त जरुरत है। अपने नेता की आवाज पर लब्बैक कहने की आदत डालों, आवाज से आवाज मिलाने की कोशिश करों तब आप देखेगें कि आपकी कोई शिकस्त देना तो दूर की बात है आपकी तरफ देखने के लिए कोई सोच भी नहीं सकेगा।

मुख्तार मन्सूरी ने हजारों के मज्जमें में अपने दुखी दिल की आवाज से अवाम को खिताब करते हुए कहा कि मैं सियासत की मार झेल रहा हूँ अपनी बीती को पेश करते हुए आगे कहां कि सियासी नेताओं ने मेरा पूरी तरह से शोषण किया। फर्श उठवाने और वोट डलवाने से लेकर गाड़ी घोड़ा रूपया पैसा तक का इस उम्मीद पर की इस्तेमाल किया कि आगे आने वाले वक्त में शायद सियासत में एक अच्छा मकाम मिलेगा। अच्छा मकाम मिलना तो दूर रहा मंच पर कभी पहचान कराने का मौका भी नहीं दिया गया। अब मैं इस सियासत से ऊब चुका हूँ जब मैने ऐसा ऐलान किया तो हमें धमकियां मिली कि कारोबार बन्द हो जायेगा और न जाने क्या-क्या।

जब मुझे अनीस मन्सूरी के काम और कौमी जज्बें की खबर मिली मेरे दिल में अल्लाह ने एक हौसला दिया, दिल से एक आवाज निकली कि अब अगर गुलामी करूंगा तो सिर्फ मन्सूरी समाज की चाहे तिजारत या कारोबार बन्द हो या चले यह तो अल्लाह के हाथ है, मैने बहुत खोया है अब तो सिर्फ समाज पर ही खर्च करूगा। लखनऊ में 29-03-2009 में होने वाले मन्सूरी समाज अधिकार सम्मेलन को कामयाब बनाने के लिये तन-मन धन सब कुछ लगा दूंगा। हम अवाम से पैसा नही मांगते पैसा तो मै खर्च करूगां। आप तो सिर्फ एक होकर कौमी आवाज को बुलन्द करें और अपनी पहचान के लिये नाम के साथ मन्सूरी लिखने की आदत डाले। अपने मकान के दरवाजे पर मन्सूरी लिखी हुई नेम प्लेट जरूर लगायें। बिरादरी के लिये हमारे दरवाजे हमेशा खुले है। अल्लाह ने हमें सब कुछ अता किया है।

तकरीर में हिस्सा लेने वालों में जनाब असगर अली मन्सूरी, अंजुम अली मन्सूरी, ताहिर मन्सूरी, हाफिज मो० एहसान मन्सूरी, खुर्शीद आलम मन्सूरी, हाजी अकबर मन्सूरी, मो० नईम मन्सूरी, नसीम मन्सूरी, जलालउद्दीन मन्सूरी, सलीमउल्ला मन्सूरी, शमीम अहमद मन्सूरी ठेकेदार मौजूद थे।

■ दिलशाद अहमद मंसूरी

Scanned with OKEN Scanner

वक़्त की ज़रुरत

लड़कियों को दीनी व दुनियावी तालीम

लड़कियों में तालीम का दोहरा म्यार अंग्रेजों की देन है। इस्लाम में लड़कियों के लिए हर तरह की तालीम हासिल करने की इजाजत दी गयी है।

—मौलाना ईसा मन्सूरी

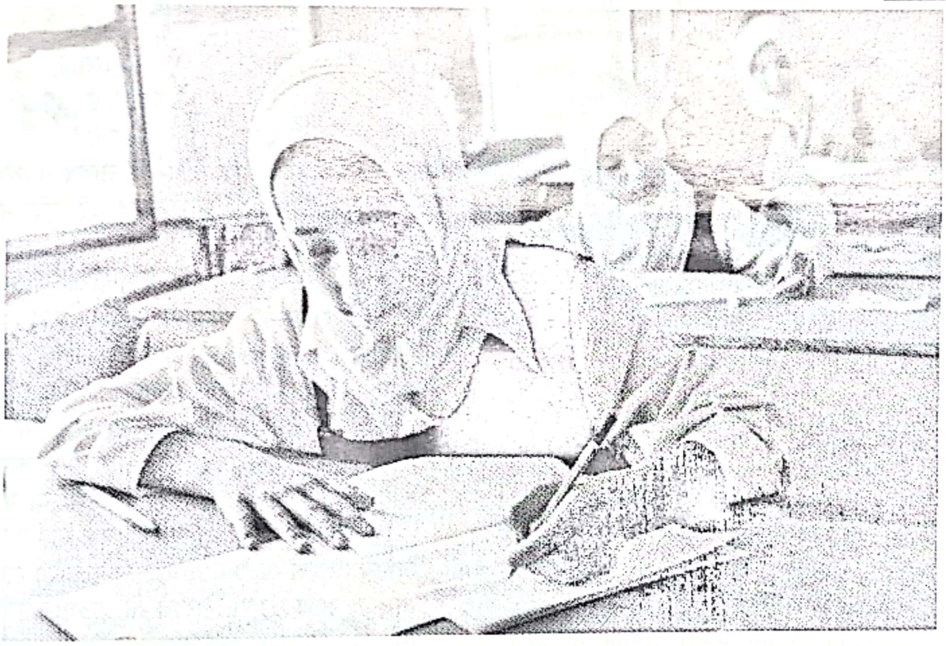

सहारनपुर। (एस0 एन0 बी0) वर्ल्ड इस्लामिक फौरम लंदन के डायरेक्टर मौलाना ईसा मन्सूरी ने लड़कियों को दीनी और दुनियावी तआलीम को वक्त की जरूरत बताया और कहां कि तालीम में दीन और दुनिया की तफरीक अंग्रेजो की देन है। इस्लामी तआलीम ऐसी किसी तफरीक का कायल नहीं। मौलाना मन्सूरी साहब आज सहारनपुर के ऑल इण्डियां दीनी मदारिस बोर्ड के जेरे अहतिमाम जमीयतुल तय्याबात में मुनक्किद तालीम निसवां कांफ्रेस को खिताब कर रहे थे। इन्होंनें कहा कि अंग्रेजो की आमद से पहले मुल्क में एक ही तर्ज–ए–तअलीम थी। मदारिस और मकतब में सारे उलूम की तआलीम दी जाती थी। उन्होनें आगे कहां कि फीज़माना लड़कियों को जेवर–ए–तालीम से आरास्ता करना हमारी तर्जिहात में शामिल होना चाहिए। मंसूरी साहब ने अपने सदारती खुतवे में दीनी मदारिस बोर्ड के कुलहिन्द सदर मौलाना याकूब बुलंद शहरी ने तालीम पर तबज्जों देने की जरूरत पर जोर दिया। इस मौके पर बोर्ड के सेकेट्री जनरल हाजी मोहम्मद यूनुस ने भी खिताब किया। कांफ्रेस की निज़ामत आशिफ याकूब ने की। कांफ्रेस को मौलाना शफीक अहमद, मौलाना अनवार अहमद, मौलाना जकलुर्रहमान के अलावा कारी शमशाद ने खिताब किया। सहारनपुर से रवाना होने पर दीनी मदारिस बोर्ड के कारवा तामीर–ए–मुल्क व मिल्लत का आज वापस सहारनपुर पहुँचने पर जेल चुंगी पर बालहाना इस्तकबाल किया गया। ये कारवां मुल्क की 10 रियास्तों का दौरा मुकम्मल करने के बाद उत्ताराखण्ड होता हुआ, देहरादून से सहारनपुर पहुँचा था। कुतुब पर शहर चेयरमैन इमरान मंसूरी ने भी कारवां का इस्तेकवाल किया और करवां के कायदीन मौलाना याकूब बुलन्देशहरी मौलना मोहम्मद ईसा मंसूरी और हाजी मोहम्मद यूनूस को कारवां की कामयाबी पर मुबारकबाद दी।

हजरत मौलाना ईसा मंसूरी साहब महाराष्ट्र, अमरावती सांगली के रहने वाले है। लगभग 35 साल से लंदन में वर्ल्ड इस्लामिक फोरम के डायरेक्टर हैं। इनके अलावा आली जनाब कारी मोहम्मद काज़िम नद्दाफ पिछले सालों की तरह इस साल भी देहली की तारीखी शाही मस्जिद फतेहपुरी में बतारिख 20 मार्च बरोज जुमा इस्लामी जम्हूरिया इरान के मशहूर ब मारुफ उल्लेमाओ में से है। दिल्ली तशरीफ़ लाये। ये हजरात इतने बड़े ओहदों पर होते हुए भी अपने खानदान और कबीलों को नहीं भूले, मौलाना मंसूरी और जनाब कारी मोहम्मद काज़िम नद्दाफ इरानी साहब से कबीले मंसूरी के नवजवानों और तालीम याफता हज़रात को सबक लेने की जरुरत है।

■ शहरोज मन्सूरी

बरकाती जनरल होम डिलीवरी

बदरूद्दीन मन्सूरी

मो.: 9936407860

शुद्ध ताजा आटा, ताजा बेसन, पीसा मसाला, सरसों का तेल, दाले और घरेलू इस्तेमाल की जरुरी चीजें उपलब्ध हैं।

31, मीरपुर कैन्ट, कानपुर, उत्तर प्रदेश

Scanned with OKEN Scanner

मिलकर तंजीम मजबूत करें

कमजोर–कमजोर मिलकर ताकतवर बनें, हुकूमत हासिल करने के लिए 18+25 काफी है। मूवमेंट से जुड़े ताकि आपके वोट की कीमत और पहचान हो सके।

बहराईच–महराजगंज। जल्से की शुरुआत मौलाना सिराजुल मंसूरी शेखुल हदीस के तिलावत–ए–कुरान से शुरु हुई। गुलपोशी और इस्तकवाल के बाद जनाब एजाज़ मंसूरी और निजामत का हक अदा किया जनाब रियाज मंसूरी ने। मेहमान–ए–एहजाज़ी आली जनाब लालमणि प्रसाद जी, सांसद ने मंसूरी समाज को खिताब करते हुए कहा कि मुस्लिम और दलित समाज के सामाजिक और आर्थिक हालत बिल्कुल एक जैसे हैं। अगर हम दोनों मिलकर वोट करते हैं तो 43 प्रतिशत वोट बनता है। पिछली सरकारें 30 और 40 प्रतिशत के अन्दर हुकूमत बनाने में कामयाब रही हैं।

आपने आगे कहा कि चुनाव के वक्त हमें किसी के बहकावे या प्रलोभन में आकर अपना वोट खराब नहीं करना चाहिए बल्कि आपको अपने मूवमेंट के सदर जनाब अनीस मंसूरी से जुड़कर उनकी आवाज पर लब्बैक कहना चाहिए, ताकि आपके वोट की कीमत आंकी जा सके और आप इज्जत के साथ ही सियासत में हिस्सेदारी के हकदार बन सकें।

मेहमान–ए–खुसूसी आली जनाब अनीस मंसूरी सदर आल इण्डिया मंसूरी समाज, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ने अवाम को खिताब करते हुए कहा कि मैंने इस एरिया को इसलिए चुना है कि यहां आज तक कोई समाज की रहबरी के लिए नहीं आया। ये सबसे पिछड़ा इलाका है। यहां के लोग एहसास–ए–कमतरी के शिकार हैं। आजादी के 60 साल बाद भी हमें सामाजिक और आर्थिक बराबरी नहीं मिल सकी। क्योंकि मंसूरी समाज ने आज तक अपना कोई मजबूत संगठन खड़ा नहीं किया और न अपना कोई सर्वमान्य नेता बनाया। मुस्लिम आबादी में 30 प्रतिशत वाला मंसूरी समाज सियासी हिस्सेदारी से महरूम रहा। हुकूमत में हिस्सेदारी और कब्जा तो 5 प्रतिशत वालों का है, जो पार्षद का छोटा चुनाव भी नहीं जीत सकते।

4 प्रतिशत यादव मुत्तहद हुए उन्होंने अपनी हुकूमत बनाने में कामयाबी हासिल कर ली। आखिर हम कब तक दूसरों की दरी और कुर्सियां उठाते रहेंगे। 15 प्रतिशत चापलूस लोगों ने सभी राजनीतिक दलों को घेर रखा है, जो 85 प्रतिशत के समाज की आवाज अन्दर तक नहीं पहुँचने देते हैं। ये समाज प्रधान से प्रधानमंत्री तक बनाता है, लेकिन हमारी गिनती कहीं नहीं है।

मंसूरी साहब ने आगे कहा कि पिछले चुनाव में हमें कोआडिनेटर बनाया गया, मैंने समाज को इकट्ठा करके बी0एस0पी0 रिजर्व सीटों पर सामूहिक वोट डलवाने का काम किया जिसकी वजह से 25 सीटें प्रभावित हुई और कामयाबी हासिल हुई। अब वक्त बदल गया है इज्जत और कामयाबी उन्हें मिल रही है जो शर्म किए बगैर अपने नाम के साथ जाति सूचक शब्द लगाकर समाज के काम में लगे हुए हैं। अशराफ मुसलमान अपने फायदे के लिए मुस्लिम बराबरी की बात करते हैं। रोटी तक की तो साझीदारी है लेकिन बेटी के मसले पर जात–बिरादरी, कुंजड़े–कसाई, धुना, जुलाहा की बात शुरू हो जाती है आखिर ये कैसी दीनदारी और कैसी बराबरी है?

हाजी जनाब यूसुफ मंसूरी साहब ने कौमी जजवात की बांनगी पेश करते हुए, एक भोर पढ़ा– आँख मिलाओ चट्टानों से, डूब के दरिया पार करो इसमें एक हौसला और हिम्मत और अहसास–ए–कमतरी को दूर करने के लिए समाज को उकसाया गया। हम कब तक दूसरों के बोझ को ढ़ोते रहेंगे। एक नेता की रहबरी में हमें इकट्ठे हो जाना चाहिए। महसी विधानसभा में मंसूरी वोटर लगभग 18 हजार हैं लेकिन कोई भी अपने नाम के आगे या पीछे मंसूरी नहीं लिखता है। अगर हमारे भाई आली जनाब वारिश अली साहब, एम0एल0ए0 अपने नाम के साथ मंसूरी लिखते तो यकीनन हमारी गिनती सियासी गलियारों में भी होती। बिरादरी के लोगों ने अपनी मेढ़ बांध रखी है। कोई मंसूरी, नदाफ, बहना और धुनिया कह रहा है। कहीं रोटी–बेटी का सम्बन्ध बन्द है। हमें इन जाहलियत की रस्मों को तोड़ना होगा। अल्लाह एक, कुरान एक, कबीला एक फिर फर्क कैसा?हमारे इस क्षेत्र में अकसरियत में मंसूरी प्रधान हैं। हमारे समाज की नींव मजबूत है। अगले चुनाव में मंसूरी विधायक के साथ ही मंसूरी वोटर अपने नाम के साथ खुलकर के मैदान में उतरेंगे। तब हमारी पहचान सियासत में सर चढ़कर बोलेगी।

तकरीर में हिस्सा लेने वालों में हाजी नबी मंसूरी, अहजाज मंसूरी, तिरयाग पहलवान, मुबीन मंसूरी, महताब मंसूरी, अफजल मंसूरी, गौंडवी के अलावा कई और हजरात ने जलसे को खिताब किया।

■ डॉ. बब्लू मन्सूरी

Scanned with OKEN Scanner

प्रजातंत्र में इंसान तौले नहीं

गिने जाते हैं

तालीम और इज्तिमाय्यत के बगैर तरक्की नामुमकिन, मुकम्मल बेदारी के लिये गांव से शहरों तक का संगठन जरूरी। पहचान को अवामी बनाने के लिये अपने नाम और काम के साथ मंसूरी लफ्ज का इस्तेमाल लाजमी बनाना होगा। हुकूमत हासिल करने के लिये दौलत, ताकत और तालीम से पहले सरों की गिनती जरूरी।

तालीम और इज्तिमाय्यत के बगैर तरक्की नामुमकिन, मुकम्मल बेदारी के लिये गांव से शहरों तक का संगठन जरूरी। पहचान को अवामी बनाने के लिये अपने नाम और काम के साथ मंसूरी लफ्ज का इस्तेमाल लाजमी बनाना होगा। हुकूमत हासिल करने के लिये दौलत, ताकत और तालीम से पहले सरों की गिनती जरूरी।

फतेहपुर (बाराबंकी) मं.पै. नामानिगार से मिली जानकारी के तहत मदरसा जियाउलइस्लाम फतेहपुर में मंसूरी समाज का एक रोजा जलसा मुनक्किद हुआ। जल्से की सदारत जनाव शाहिद मंसूरी फतेहपुरी ने की और निजामत का हक अदा किया जनाब गुलाम यजदानी मंसूरी लखनऊ ने।

आये हुए मेहमानों का गुलपोशी से इस्तेकवाल किया गया। जल्से का आगाज़ कारी जनाब मुजीब मंसूरी की तिलावत–ए–कलामपाक से शुरु हुआ।

मन्सूरी समाज का पैगाम हमेशा मुस्लिम इतिहाद के लिए हुआ है लेकिन कुछ अशराफ कहे जाने वाले मुस्लिम नेताओं ने हमेशा ही गलत मतलब निकाला कि मन्सूरी समाज मुसलमानों में तफरीक पैदा कर रहा है जबकि हकीकत ये है कि कौमी रहनुमा समाज को तालीम के जरिये समाजिक बुराईयों से निकालने और दीन से जोड़ कर सच्चा–पक्का मुसलमान बनाने की मुहिम चलायी जा रही है ताकि वे अपने हुकूक की पामाली से बच सके। मन्सूरी समाज पूरे मुल्क में 53 नामों से पुकार जाता है जिसका फायदा सियासी पार्टीयां उठाती रही हैं इस समाज का वोट कभी और कही गिना ही नही गया। अब वक्त आ गया है कि हम तमाम नामों को छोड कर सिर्फ मन्सूरी लफज का इस्तेमाल करें इससे समाज का इत्तेहाद मजबूत होगा। ये पैगाम जल्सागाह में जनाब शाहिद मन्सूरी ने बड़ी तादाद में आये हुय मन्सूरी समाज को खिताब करते हुए कहे। जनाब मन्सूरी साहब ने आगे कहा की तमाम पिछड़े हुए समाज इकट्ठे हो रहे है। हमें भी एक कौमी लीडर की रहबरी में लब्बेक का नारा बुलन्द करना होगा और अपने हक की लड़ाई खुद ही लड़नी होगी। इस इंकलाब के लिए हमारी रहबरी जनाब अनीस मन्सूरी कर रहे है। तमाम समाज को इनके साथ कदम से कदम मिला कर चलना होगा।

मौलाना मुबारक मन्सूरी साहब ने खिताब करते हुए कहा कि मोहर्रमुल हराम का महीना हमें बड़े से बड़े ज़ालिम के आगे न झुकने कि हिदायत देकर कुर्बानी का सबक देता है। बुश जो अमेरिका के ही नही दुनिया के सुप्रीमों पर जनाब मुंतजिर रिज़वी नाम के सहाफी के

डॉ. अजीज मन्सूरी 'बब्लू' खिताब करते हुए

जूते की मार दुनिया के तमाम कमजोर इन्सानों के दिलों में इराकी तबाही और कत्लोगारत के बदले की शक्ल में घर कर गया। जनाब मन्सूरी साहब ने अपने खिताब के आखिर में एक शेर पढ़ा....

एक सहाफी को जमाने में शौहरत मिल गयी।
खाक में फिरौन की सारी रऊनत मिल गयी।।
इतनी कीमत में तो आ जाते कई शाहों के ताज।
मुन्तजिर को जितनी एक जूते की कीमत मिल गयी।।

इरफान मन्सूर मेहमूदाबादी ने कहा कि अगर हम सब एक हो जायें तो कामयाबी हमारे कदम चूमेगीं। हयात भीख में नहीं मिलती, हमें कुर्बानी का जज्बा पैदा करना होगा, फलदार पेड़ की तरह अवाम को फायदा पहुंचा कर समाज के दिल में जगह बनानी होगी। डा0 मों0 अली मन्सूरी साहब का जिक्र करते हुए आप ने कहां कि वे मेरे बड़े भाई है लेकिन आज बिस्तर पर है उनके दिल में जो तमन्ना थी ये उनके ख्वाबों की तामीर है। कौमी लीडर का जिक्र करते हुए आपने कहा की मन्सूरी समाज आज तक कोई सर्वमान नेता पैदा नही कर सका। जिसके हाथ पर आज हम लब्बेक कहकर खडे हो जाते। मन्सूरी अनीस साहब ने समाज की क्यादत संभाल कर हमें राह दिखाई है। मैं तमाम कामयाबी के लिए दुआ करता हुँ।

हाजी हनीफ मन्सूरी साहब जिला पंचायत सदस्य बाराबंकी ने अपने खिताब में कहां कि हमारे समाज में तालीम की बेहद कमी है इसी कमी की वजह से लोगों में एहसास–ए–कमतरी घर कर गयी है। हम पसमांदगी के शिकार होकर रह गये है जानवर और आदमी में सिर्फ अक्ल का ही फर्क है, यहां पर जो बात कही जा रही है उसके लिए कहने वाले ने तो अपनी जिम्मेदारी निभा कर फर्ज अदा कर दिया अब सुनने वाले की जिम्मेदारी है कि बात पर अमल करे और आवाम तक बात को आगे बढ़ाकर कौम की मदद करे। हमें मिल बैठ कर आपने ज़हनों को बदलना होगा। छोटे–बड़े और ऊच–नीच की दीवार को गिरा कर आपस में भाईचारा का रिश्ता कायम करके अपने ऊपर डाली गयी जिम्मेदारियों कों निभाना होगा। हम कुछ अपने साथ लेकर जाये अगर हमनें सुनकर अमल न किया तो हमें ये काप्रेन्स कोई फायदा न पहुचा सकेगी।

हाजी नवी मन्सूरी सम्पादक मन्सूरी पैग़ाम ने जनाब अनीस मन्सूरी सदर ऑल इण्डिया मन्सूरी समाज के जल्से में शिरकत न होने की मजबूरी और कारगुजारी पर रोशनी डालते हुए कहां की पिछली तन्जीमों कि कारकर्दगी शहरों तक ही महदूद रही लेकिन अनीस साहब ने अपने काम का मैदान गांव से शुरू किया क्योंकि ये भी गांव के रहने वाले, गरीबों का दर्द और गुर्बत के हालात से बाखूबी वाकिफ़ हैं। पिछली तन्जीमों ने जो काम 60 साल में नही किया वो इन्होंने 30 महीने में कर दिखाया।

सम्पादक साहब ने आगे कहा कि इस दौर में तालिम की बेहद जरूरत है क्योंकि सभी तालों कि कुन्जी तालीम में पोशीदा है। हमारे पास एक डुब्लीकेट चाभी भी है अभी हम इससे काम ले सकते है जो फारायज के दरजे में है अगर हम मुत्तहद हो जाये तो हुकूमत के बन्द दरवाजे के ताले को खोल सकते है। क्योंकि प्रजातंत्र में इन्सान तौले नही गिने जाते है। 51 बेवकूफ 49 अकलमन्दों पर हुकुमत करते है। मन्सूरी समाज की आबादी मुस्लिम समाज की 30 प्रतिशत से ज्यादा है अगर हम अपने सर गिनाने में कामयाब हो तो सरकार में हमारी हिस्सेदारी मुम्मकिन है।

डा0 बब्लू मन्सूरी नें आवाम को खिताब करते हुए कहां की मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि आज बाराबंकी के लिए ये पहला मौका है जब इतनी बड़ी तादाद में एक प्लेट फार्म पर हमारा समाज जमा हुआ है इस मौके का फायदा उठा कर संगठन और मजबूत बनाकर सियासी फायदे उठाये जा सकते हैं। आखिर में एक सेर पढ़ कर अपनी बात को इख़्तिताम पर पहुचाया।

हम तो ठहरे झील के पानी की तरह।
दरिया बनते तो दूर निकल सकते थे।।

अकबर अली मन्सूरी ने जमीयत का तराना और मौलवी अली हसन मन्सूरी ने गीत पेश कर आवाम का दिल जीत लिया। इस मौके पर जनाब मो0 नसीम मन्सूरी, मोहब्बत अली मन्सूरी, शाकीर अली मन्सूरी, मुख्तार मन्सूरी, शब्बन मन्सूरी, मुम्ताज़ प्रधान, रहीम बख्श मन्सूरी, मो0 खालिद मन्सूरी, अब्दुल जब्बार मन्सूरी, डा0 मो0 अहमद मन्सूरी, मो0 आरिफ मन्सूरी, आलम मन्सूरी, ताजू मन्सूरी वगैरा के नाम काबिले जिक्र हैं।

आखिर में शाकीर मन्सूरी ने आये हुए मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

■ मौलाना इल्यिास मन्सूरी

हमारे पास एक डुब्लीकेट चाभी भी है अभी हम इससे काम ले सकते है जो फारायज के दरजे में है अगर हम मुत्तहिद हो जाये तो हुकूमत के बन्द दरवाजे के ताले को खोल सकते है। क्योंकि प्रजातंत्र में इन्सान तौले नही गिने जाते है। 51 बेवकूफ 49 अकलमन्दों पर हुकुमत करते है।

Scanned with OKEN Scanner

सदर को मुकुट और तलवार का तोहफा

ऑल इण्डिया मन्सूरी समाज आगरा की तरफ से आली जनाब अनीस मन्सूरी सदर उत्तर प्रदेश को जनाब असद मन्सूरी, नदीम मन्सूरी और इनके साथियों ने चांदी का मुकुट पहनाकर और अपने दस्त-ए-मुबारक से समसीर (तलवार) भेंट कर नवाज़ा गया।

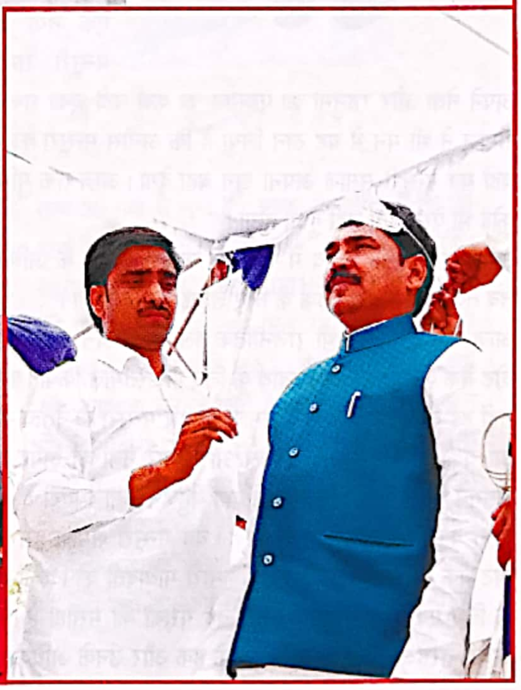

कर्ज चुकाना है

आल इण्डिया मन्सूरी समाज अधिकार सम्मेलन संयोजक एवं अध्यक्ष लखनऊ मंडल हाजी शरीफ मन्सूरी ने कहा कि प्रदेश अध्यक्ष माननीय अनीस मन्सूरी द्वारा किए जा रहे मन्सूरी समाज को एक प्लेटफार्म पर लाने और लोगों के मान-सम्मान दिलाने की कोशिशों को हम सभी मन्सूरी समाज के लोगों को आगे बढ़ाना है और उनके द्वारा समाज के अधिकारों के लिए लड़ी जा रही लड़ाई में हम सभी को उनके साथ खड़े रहना है। मन्सूरी समाज आज से कुछ दिन पहले दबा और कुचला समाज कहा जा रहा था लेकिन अनीस मन्सूरी ने पूरे प्रदेश में मंसूरियों को मान-सम्मान और एक नया आयाम दिया यह मन्सूरी समाज जिन्दगी भर अपने नेता और रहनुमा का एहसान का कर्ज नहीं चुका सकता। लेकिन मन्सूरी समाज ने भी मन में यह ठान लिया है कि अनीस मन्सूरी का जहां पसीना बहेगा वहां यह मन्सूरी समाज अपना खून बहा देगा। आज तक मुस्लिम पिछड़ा वर्ग में कोइ भी ऐसा नेता नहीं हुआ होगा।

अनीस मन्सूरी के नेतृत्व में जब तक मन्सूरी समाज के अधिकार नहीं मिलते हैं तब तक समाज अपने हक के लिए लड़ाई लड़ता रहेगा।

आज तक के जितने भी राजनीतिक दल रहे उन्होंने मन्सूरी समाज के लोगों के वोट बैंक को केवल अपने स्वार्थ के लिए ही इस्तेमाल किया। कहीं भी उनकी चिंता नहीं हुई लेकिन अब मन्सूरी समाज अनीस मन्सूरी के नेतृत्व में एक प्लेटफार्म पर आ चुका है और इस समाज को और हमारे नेता को अगर किसी पार्टी ने मान सम्मान देने का काम किया है तो वह बहुजन समाज पार्टी है और उनकी मुखिया बहन कुमारी मायावती ने किया है। यह मन्सूरी समाज इस लोकसभा में अपने वोट बैंक का इस्तेमाल कर बहन कुमारी मायावती को दिल्ली की कुर्सी पर बैठाने के लिए एकमत हो चुका है और वह गरीबों की मसीहा है। मन्सूरी समाज यह अच्छी तरह से समझता है कि उनके हक और उनके अधिकार कोई दे सकता है

तो वह बहन कु. मायावती है।

मैं हाजी शरीफ मन्सूरी इस मन्सूरी समाज से यह अपील करना चाहूंगा कि जिस तरह पूरे प्रदेश में हमारे नेता माननीय अनीस मन्सूरी, मन्सूरी समाज के अधिकारों की लड़ाई लड़ने का और उनको अधिकार दिलाने का काम कर रहे है यह मन्सूरी समाज उनको कदम से कदम मिला कर दिन-रात उनके साथ लगा रहे क्योंकि उन्होंने मन्सूरी समाज के मुस्तकबिल के लिए जो कुछ किया है और जो कुछ कर रहे हैं उसका कर्ज कभी नहीं चुकाया जा सकता।

''हौसला है, तमन्ना है
तुझ से ही बनना है
इंकार मत करना ऐ अनीस
मन्सूरियों का इतिहास
तुम्ही से बनना है।''

हाजी शरीफ मन्सूरी

Scanned with OKEN Scanner

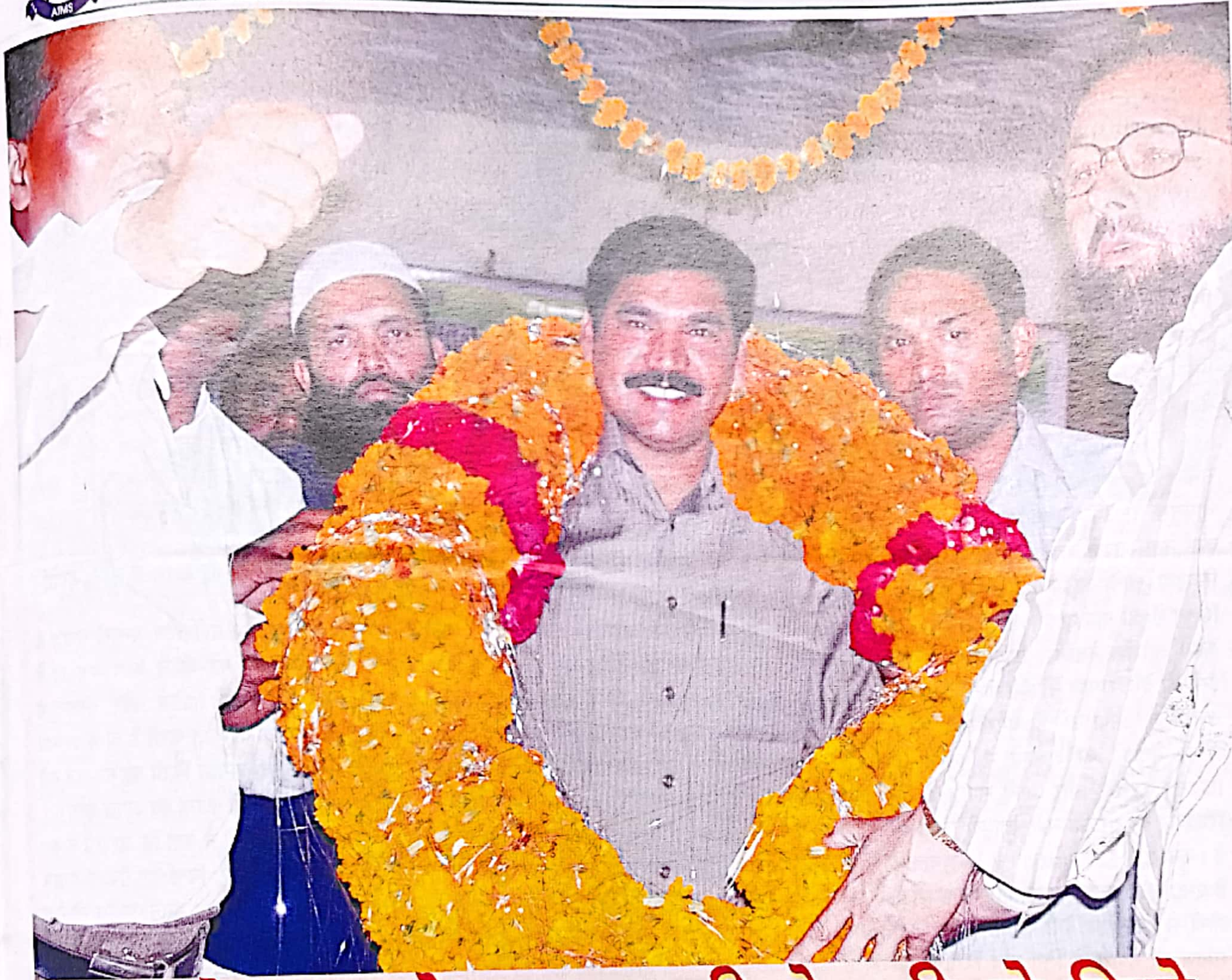

एक नेता चुनो समाज की बेहतरी के लिये

सामाजिक दर्द को संगठन के जरिये आवाम में बांटें, मिशन को पूरा करने के लिये रात दिन की नींद हराम। मस्तूरात को सामाजिक मसायल की जानकारी जरुरी कौमी लीडर पर यकीन रखना लाज़मी।

हरदोई। मन्सूरी समाज हरदोई का एक रोजा सेमीनार गांधी भवन हरदोई में मुनक्किद हुआ। जल्से की सदारत जनाब अब्दुल मजीद मन्सूरी सदर जिला तंजीम और मेहमान-ए-खुसूसी का ओहदा सम्हाला आली जनाब अनीस मन्सूरी सदर उत्तर प्रदेश लखनऊ नें। निजामत का हक अदा किया जनाब सरताज मन्सूरी शाहजहांपुरी ने जल्से की शुरूआत दर्से कुरान और नात-ए-नवी सल्ला0 से हुई।

मेहमान-ए-खुशूसी जनाब अनीस मन्सूरी सदर उत्तर प्रदेश ने कहा कि तंजीमी काम की शुरूआत अचानक ही नहीं हुई मैने करीब से समाज को देखा ही नही सामाजिक दर्द को झेला है। जो गरीब मन्सूरी समाज आज झेल रहे है। मैने इस दर्द को संगठन के जरिये अवाम में बाटने का अहद किया और मुझे मुरादाबाद के अधिवेशन में ये मौका मिल ही गया। जिस रोज से मेरे कमजोर कंधों पर समाज की जिमेदारी का बोझ पड़ा उस रोज से अपने साथियों के साथ 30 माह से लगा हूँ। उसका ये नतीजा है कि 29 मार्च 09 को बलरामपुर गार्डन लखनऊ में प्रदेश स्तरीय मन्सूरी समाज का आयोजन किया जा रहा हैं। पूरे प्रदेश से जो सूचनाये मिल रही है वे समाज के लिय खुशी का पैगाम दे रही है। शादीयों में आप बच्चों को सजाधजा कर ले जाते है। लेकिन समाजिक काम की जिम्मेदारी घर के बूढों पर डाल दी जाती है। मैं आप से गुजारिश करता हूँ कि सपरिवार इस सम्मेलन में आये ताकि घर की मस्तुरात को भी आपस में बैठने और मिलने का मौका मिले। क्योकि सामाजिक काम के लिए मर्दो को अकसर घरो में तकरार करनी पड़ती

है। क्योकि मस्तूरात को ये मौके कभी नही मिलते वे इस काम की अहमियत ही नही जानती।

इस काम में बडी-बडी रूकावट सामने आ रही है। अशराफ मुसलमान हमें ये समझाने की कोशिश कर रहा है कि इस काम में आपको क्या मिलेगा। वे हमसे ये चाहते है कि ये मिशन का काम बन्द कर दिया जाये। मैने जवाब मे कहां की पेड़ लगाने वाले फल नही खाते इसका फायदा हमारे समाज को मिलेगा। मेरी ये गैर बराबरी की लड़ाई जब तक चलती रहेगी जब तक समाज को उनका हक नही मिल जाता। अभी तक 60 सालों से समाज को कोई नेता नही मिला। तमाम सियासी पार्टीयों के आगे पीछे अपने छोटे-छोटे कामों के लिये दुम हिलाते रहें। समाज का भाई इतना सीधा और सच्चा है कि चापलूस नेताओं के चक्कर में जल्दी पड़ जाता है कोई नेता आपके बच्चे के मुडन में आ गया, ईद में सिवइया खाने आ गया या फिर मस्जिद पर ईद मिलन में आ गया आप फूल कर कुप्पा हो गये, और कहने लगे कि नेता घर आया था हम अपना वोट इसी को देगे, समाज ने कभी वोट की कीमत ही नही समझी जो आया उसे ही बगैर सोचे समझे वोट दे दिया। नेताओं को शादियों में बुलाकर हम बडी खिदमत करते है और अपने समाज के लोगो और रिश्तेदार को तरजीह नही देता जो गुनाह-ए-अजीम है। कुछ लोग इलजाम लगाते है कि चुनाव का मौका है एम0 एल0 ए0 या एम0 पी0 बनना होगा। मैं ऐसे लोगों से साफ कह देना चाहता हूँ कि जितना पैसा समाज की बेदारी के लिय खर्च किया जाता रहा है इतने में तो मैं किसी क्षेत्र से चुनाव लड़कर जीत जाता लेकिन मेरे जीतने से कुछ नही होता नक्कर खाने में तूती की आवाज सुनाई नही देती ठीक वैसे ही मेरे साथ हाऊस में होता। मैं चाहता कि अगर एम0 एल0 ए0 बनना ही है तो कम से कम 25 लोगों को लेकर हाऊस जाऊगा।

हमारा समाज जरा में नाराज हो जाता और साथ छोड़ देने की धमकी भी देता है। जरा गौर करे उस दलित समाज की जो शदियों से जुल्म सहता आया है। लेकिन उसनें कभी अपने नेता से कोई शिकायत नही की ओर न कोई मौका दिया आज हुकूमत कर रहे है। उसी कुरबानी का नतीजा है अगर हममें जरा भी सलाहीयत होती तो ये कौम न जाने कब की बेदार हो चुकी होती। अब बेदारी की थोड़ी सी रमक नजर आने लगी है। अब मौका मिला है अपने दिल के जज्बात को परवान चड़ाने का अगर दिल में दर्द है तो निकल पड़िये कौम के दर्द में हिस्सा लेने के लिय। मत घबराइये कि काम बन्द हो जायेगा, दुकान बन्द हो जायेगी, एक दिन की मजदूरी मारी जायेगी। कौम की भलाई का अहद करते हुए लब्बैक का नारा बुलन्द करे और भर दें लखनऊ की सड़कों को मुझे पैसा नही चाहिए। आप के थोड़े से वक्त की जरूरत है इस सन्देश को घर-घर पहुचाने के लिय वक्त निकाले, कामयाबी आपके कदम चूमेंगी।

अब्दुल मजीद मन्सूरी, जिला सदर, हरदोई

मुख्तार मन्सूरी ने कहां कि मैने समाज को छोड कर सियासत में कुछ नही पाया सिवा खोने के अब मैने तय कर लिया है कि किसी भी सियासी पार्टी की जरूरत नही बनूगां अब तो सिर्फ कौमी रहनुमाओं की आवाज पर लब्बे की सदाये बुलन्द करूगा। उसका नतीजा कुछ भी हो सब सहने के लिये तैयार हूँ। शरीफ मन्सूरी ने कहां अनीस मन्सूरी के उठाये गये कदम की जितनी तारीफ करे कम है। 53 नामों जैसा समाज अब मुतहद हो चुका है। उसे सड़कों पर निकलने की जरूरत नही। अब समाज का हक दिलाने का काम अनीस मन्सूरी करेगा। समाज में ऐसे लोग भी होते है जो बढ़तें हुए कदमों को पीछे खीचते है ऐसे लोगों से होसियार रहना होगा।

मुख्यमंत्री जी उत्तर प्रदेश ने हिन्दू पिछड़े समाज के सभी वर्गो को संगठन में हिस्सेदारी दी है जिससे समाज एक प्लेट फार्म पर आ गया है लेकिन पिछड़े मुस्लिम समाज में जो पिछड़ी बिरादरीया है उनको संगठन में हिस्सेदारी ये कहकर न देना ही मुसलमान सभी ऐक है ये चाल 15 प्रतिशत का अशराफ मुस्लमानो की तरफ से सरकार को नुक्सान पहुचाने के लिय कि जा रही है। इस पर सरकार को होसियार रहने की जरूरत है। यही लोग मन्सूरी समाज के काम को मुसलमानों को बाटने वाला बता रहे है अगर हम समाज को तालिम और संगठन से जोड़कर उनके हक की बात करते है तो ये अलगाव कहा है अब मन्सूरी समाज किसी का मोहताज नही रहेगा। हमारा लीडर जो कहेगा हम अमल करेगे।

अन्जुम अली मन्सूरी ने कहा कि आजादी के बाद से हम बदल-बदल कर बिना तफरीक-ए-मजहब सरकारें बनाते आये है अब हमने अनीस को नेता मान लिया है तो शर्म कि क्या बात है हमें लखनऊ की रवानगी को पहले दर्जे पर रखना है और अगर हमने अबल नम्बर पर नही रखा और हम नाकमयाब हुये तो वर्षो सर नही उठा सकेगे। इसलिये इन मौके को हाथ से न जाने दे और एक बन कर दिखा दे। हम सब अपने और अपने परिवार के लिये काम करते है लेकिन अनीस मन्सूरी समाज के लिये काम कर रहा है उसकी आवाज पर उसका साथ दे वक्त की कुबार्नी देकर शहीदों में नाम लिखाये।

तकरीर में हिस्सा लेने वाले में अब्दुल मजीद मन्सूरी, मुईद मन्सूरी, अब्दुल करीम मन्सूरी, नूर मोहम्मद मन्सूरी, मास्टर जका उल्लाह, अब्दुल हमीद मन्सूरी, रफीक भाई, नन्हे भाई, व दीगर हजरात।

Scanned with OKEN Scanner

अल्लाह एक है
हालांकि उसके नाम अनेक हैं –टीपू सुल्तान

26 नवम्बर की शाम लगभग साढ़े सात बजे सभी खबरिया चैनेलों पर किलपिंग के जरिए एक ब्रेकिंग न्यूज प्रसारित की जा रही थी। "मुम्बई शहर पर आंतकवादी हमला हो गया है, यह एक बड़ा आतंकी हमला है"।

ठीक उसी समय कुछ कट्टरपंथी सम्प्रदायिक संगठनों की प्रतिक्रियाएं भी आ रही थीं। कि यह इस्लामिक जेहाद है और इस तरह वे अप्रत्यक्ष रूप से इस्लाम पर उंगली उठा रहे थे। इसमें कोई शक नहीं मुम्बई आतंकवादी हमला हर भारतीय के लिए रोएं खड़े कर देने वाला था। लेकिन आज मैं स्पष्ट रूप से बताना चाहता हूँ कि इस्लाम का मतलब ही भाक्ति होता है और इस्लाम में किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार जुल्म और जायदती की कोई जगह नहीं, जहाँ तक आतंकवाद का सवाल है तो यह इस्लामिक संदेश के बिल्कुल विपरीत है। फिर क्यों कुछ लोग राजनीतिक फायदे के लिए "आतंकवाद" शब्द के पहले "इस्लामिक" शब्द का, प्रयोग करते हैं।

आज मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ। दो सौ सत्ताईस वर्ष पहले भी भारत वर्ष में विभिन्न समुदाय के लोग रहा करते थे लेकिन जरा उस समय की एक महत्वपूर्ण रियासत के सम्राट की विचारधारा उनके इस एक वक्तव्य से देखिये– "ईश्वर एक है, हालांकि उसके नाम अनेक हैं। इस एक वाक्य में आपको मानवता का हल मिल सकता है। यह वक्तव्य मैसूर के शक्तिशाली राजा टीपू सुल्तान का अपनी प्रजा के समक्ष" टीपू के वक्तव्य की यह एक लाईन सभी कट्टरपंथी और साम्प्रदायिक लोगों के सभी सवालों और इल्जामों का एक सीधा जवाब रखता है। वास्तव में टीपू सुल्तान के इस वक्तव्य का असल तात्पर्य है कि किसी प्रकार के कट्टरपंथ और आतंकवाद की किसी भी धर्म में कोई जगह नहीं और धर्म हमेशा मानवता का पाठ पढ़ाता है। टीपू सुल्तान ने इसे अपने निर्णयों कार्यों और प्रयासों में साबित भी किया था। उसके शासनकाल में बहुत सारे मन्दिरों की रक्षा टीपू के द्वारा की गयी थी। जो इतिहास में दर्ज है साथ ही अधिकतर भारतीय श्रीनगरी मठ के पुनरुद्धार की कहानी भी जानते हैं जो कि टीपू सुल्तान द्वारा अन्जाम दी गयी थी और उस मठ की रक्षा टीपू सुल्तान ने ही की थी। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि टीपू केवल एक मात्र धर्मनिरपेक्ष सुल्तान हुए हैं। बल्कि बहुत से राजा, मराठा, क्षत्रिय और राजपूत राजा भी धर्मनिरपेक्ष राज्य करते और एक राज्य होने क बावजूद वे कभी साम्प्रदायिक भाषा का प्रयोग अपने वक्तव्यों में नहीं करते थे। लेकिन आज मैंने सिर्फ टीपू सुल्तान का उदाहरण इसलिए दिया कि कट्टरपंथी और साम्प्रदा–यिक लोग यह समझ जाएं कि टीपू सुल्तान भी एक इस्लाम धर्म का अनुयायी था और यदि वह इस्लामिक राज्य स्थापित करना चाहता तो उसकी शुरुआत वह मैसूर से करता पर न तो टीपू और न ही कोई मुस्लिम हिंसा, आतंकवाद और नफरत देखना चाहता है। एक भारतीय होने के नाते मैं यह बात दावे से कह सकता हूं कि कोई भी सच्चा भारतीय और देशभक्त किसी भी प्रकार के आतंकवाद में शामिल नहीं हो सकता। कुछ लोग यह कह सकते हैं कि मैं केवल अच्छे सुल्तान और राजा की बात कर रहा हूँ और मैं अत्याचारी शासन के बारे में कुछ भी नहीं कह रहा हूँ। मेरा मानना है कि हमें सदैव सुदृढ़ और एकता के सूत्र में बंधे राष्ट्र के निर्माण के लिए सकारात्मक बातों को स्वीकारना चाहिए तथा नकारात्मक और विवादास्पद बातों को दर–किनार करना चाहिए। इस तरह हम आने वाली युवा पीढ़ी को सम्राट अशोक, राजा सिद्धार्थ, वीर अब्दुल हमीद, हेमन्त करकरे, अशोक काम्टे, विजय सावरकर और मैसूर के सुल्तान और मेरे आज के लेख के केन्द्र बिन्दु टीपू सुल्तान का उदाहरण देकर उनमें राष्ट्रभक्ति और सर्वधर्म सम्मान की भावना पैदा कर सकते हैं। चूंकि मेरा यह लेख उस पत्रिका में छप रहा है, जो मंसूरी समाज के लोगों को जोड़ने का काम करती है। तो उनसे मैं खासकर कहना चाहूँगा कि टीपू सुल्तान आपके वंशजों में से है लिहाजा आपको उनसे प्रेरणा लेना और उसे साबित करना कि हम टीपू सुल्तान की विचारधारा के रखवाले हैं। यह हमारा कर्त्तव्य भी है और समय की पुकार भी।

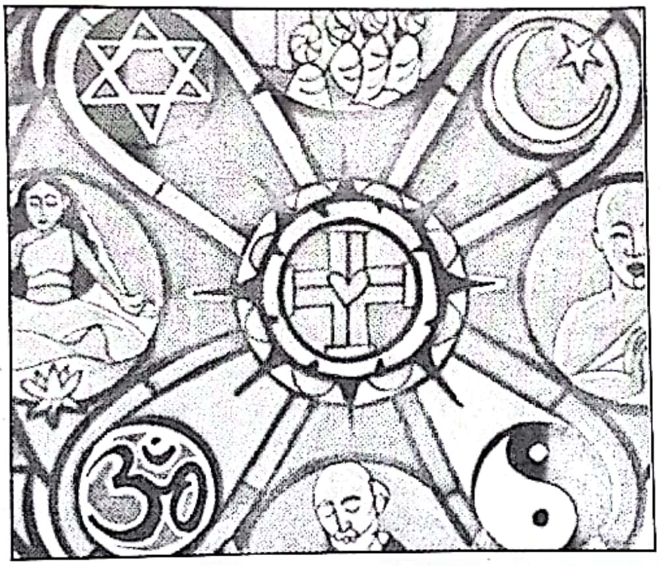

■ **दिलशाद अहमद मंसूरी**

लेखक टेलीविज़न न्यूज चैनेल से जुड़े हुए हैं।

हुकूमत में हिस्सेदारी और वोट एक साथ

अगामी चुनाव में सभी मन्सूरी समाज को अपने वोट की ताकत को दिखाना है ताकि सब देख ले कि मन्सूरी समाज अब पहले की तरह सो नहीं रहा है जो किसी भी राजनीतिक पार्टी के बहकावे में आ जाते थे और कोई फायदा नहीं होता था, फायदा तो बस वह हमसे उठा ले जाते थे। पर अब बसपा ने मन्सूरी समाज के वोट बैंक को पहचाना है और समाज के अधिकारों को दिलाने का वादा किया है। यह तभी हो सकता है जब हम सब मिलकर बहन मायावती के हाथों को मजबूत करें।

मुस्लिम समाज में मन्सूरी समाज लगभग 30 प्रतिशत से ज्यादा है अगर संगठित होकर किसी एक पार्टी को वोट कर देता या करता रहता तो यकीनन हमारी हिस्सेदारी सभी पार्टीयों में हो जाती

पिछड़ा मुस्लिम मन्सूरी समाज को आजादी के बाद से सभी सियासी और हुकमरा पार्टियों ने सत्ता में आने के बाद कभी मूड़कर भी नहीं देखा कि समाज के हालत कैसे हैं। मन्सूरी समाज अब बेदार हो गया है एक हाथ से दो और दूसरे हाथ से लो की पालिसी पर अमल करेगा।

लखनऊ - म0पै0 रिर्पोटर आल इण्डिया मन्सूरी समाज उत्तर प्रदेश के जरियें 29 मार्च 2009 को होने वाले मन्सूरी समाज अधिकार सम्मेलन लखनऊ की कामयाब बनाने के लिये पूरे प्रदेश से आये तंजीम के ओहदेदारान के हिस्सा लेकर सम्मेलन की कामयाबी पर गौरो फिक्र की।

जलसे की शुरूआत तिलावत-ए-कुरान मौलाना जनाब इल्यास मन्सूरी बाराबंकी ने की, और निजामत का हक अदा किया जनाब इरशाद मन्सूरी जिला बिजनौर ने और सदारत तंजीम के सूबाई सदर जनाब अनीस मन्सूरी ने की। आये हुए हजरात ने अगले जलसे की कामयाबी के लिये अपने-अपने ख्याल की इजहार करते हुए भीड़ को जमा करने के लिये संसाधनों यातायात व्यवस्था, ठहराने और खानपान का इन्तजाम और उस पर होने वाले खर्चो की जिम्मेदारी का एलान किया और प्रोग्राम के लिए माली मदद का

वायदा किया।

तंजीम के सदर जनाब अनीस मन्सूरी ने कहा कि मन्सूरी समाज ने कभी भी अपने अधिकारों की मांग तक नहीं की वे एक बेहतरीन नागरिक की हैसियत से सभी सियासी पार्टी को वोट देकर हुकूमत बनाने तक मौका इस इंतजार में देते रहे कि अब हमें सियासत में हिस्सेदारी मिलेगी लेकिन किसी भी दल ने वोट पाने के बाद मुड़कर नही देखा, उसकी वजह हमारे संगठन की कमी रही। मुस्लिम समाज में मन्सूरी समाज लगभग 30 प्रतिशत से ज्यादा है अगर संगठित होकर किसी एक पार्टी को वोट कर देता या करता रहता तो यकीनन हमारी हिस्सेदारी सभी पार्टीयों में हो जाती लेकिन चन्द मफाद परस्त कौमी रहनुमाओं ने वोट को बांट दिया। वे किसी के होकर नही रहे।

पिछले चुनाव में वहन मायावती जी ने हमारे सदर को बी0एस0पी0 भाईचारा समिती का उ0प्र0 की कोडिनेटर बनाकर हिस्सेदारी की शुरूआत की लेकिन वर्षो से दबी कुचली कौम का इससे कोई फायदा नही हुआ जबकि अनीस मन्सूरी ने समाज को एक प्लेट फार्म पर लाने की बेहद मेहनत की और समाज को बी0एस0पी0 से जोड़ कर और कई विधयकों को कामयाब बनाने का काम किया आज भी जीते हुए एम0एल0ए0 इस समाज के एहसानमंद है लेकिन इतना सब हो जाने के बाद भी सरकार से हमें कोई हिस्सेदारी नही मिली जिससे समाज का कोई भला होता। इस बात को लेकर तमाम ओहदेदारों ने 29 मार्च 09 को बलरामपुर गार्डन में अपने सियासी अधिकार पाने के लिये बड़े सम्मेलन का एलान किया।

आए हुए तमाम पदाधिकारीयों ने अपने हुकुक के लिये कहा कि इस समाज का पुस्तेनी कारोबार मशीनों ने ने लिया है। धुनिया, रूई की सफाई और रजाई, गद्दे का काम करके परिवार पालते रहे।

कपड़ा उद्योग के दो प्रारम्भिक मजदूर धुनिया जो रूई सफाई से लेकर, धागा तैयार करने का काम करता है और जुलाहा तैयार धागे से कपड़ा बुन कर जरुरते पूरी करता है। ये दोनो मजदूर एक

तकरीर करते हुए इरशाद मन्सूरी, मंडल अध्यक्ष, झांसी

बेहतरीन इमारत के दो भाग हैं पहला नींव का हिस्सा और दूसरा भवन का हिस्सा लेकिन सरकार को दूसरा हिस्सा भवन ही दिखाई दिया और उसकी देख रेख के लिये बुनकर आयोग बनाया गया जिससे जुलाहों कपड़ा बुनने वालों का मयार-ए-जिंदगी बदल गया लेकिन नींव के पत्थरों पर सरकार की नजर कभी नहीं पड़ी कि इन रुई मजदूरों के लिये भी एक धुनकर आयोग गठित किया जाता ताकि मन्सूरी धुनकर समाज की हालात को बदल कर उन्हें भी समाज में एक बेहतर मकाम हासिल होता। आज ये समाज पहले से बदतर जिन्दगी वसर कर रहा होता।

आगे मन्सूरी साहब ने कहा कि बगैर सरकार में हिस्सेदारी के हम कामयाब नहीं हो सकते हमने अपने हुकुक पाने के लिये 29 मार्च 09 का दिन चुना है जिस में हजारो की तादाद में लोग लखनऊ में इकट्ठा होकर अपनी आवाज को सबकी आवाज पर लब्बैक करेंगे।

सम्मेलन के संयोजक हाजी शरीफ मन्सूरी ने 29 मार्च 09 के सम्मेलन को कामयाब बनाने के लिये अलग-अलग कमेटियां गठित की। काम को बेहतर बनाने के लिये अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी। बैठक में सूबे के 45 जिलों के जिम्मेदारी का हिस्सा लेकर अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने का वादा किया।

इससे पहले होटल गोमती 23 सितम्बर, 06, फैन्थम हाल, अशोक मार्ग, 12 अगस्त, 07, होटल मेरा मन 3 फरवरी और होटल मेजबान, यह तंजीम का चौथा कार्यकर्ता सम्मेलन है। जो सिर्फ तीस माह की मुद्दत में मुनक्किद हुए।

■आफताब आलम मन्सूरी

होटल मेजबान में इरशाद मन्सूरी ने कहा कि समाज को एक प्लेट फार्म पर लाने की बेहद मेहनत की और समाज को बी0एस0पी0 से जोड़ कर कई विधायकों को कामयाब बनाने का काम किया आज भी जीते हुए एम0एल0ए0 इस समाज के एहसानमंद है लेकिन इतना सब हो जाने के बाद भी सरकार से हमें कोई हिस्सेदारी नही मिली

मुस्लिम पिछड़ा समाज संगठित हो
मन्सूरी मसाज के सदर का आवाहन

खुदा ने आज तक उस कौम की हालत नही बदली।
न हो जिसे ख्याल खुद अपनी हालत बदलने का।।

इस समय हिन्दुस्तान में लगभग 30 करोड़ मुस्लिम आबादी है जिसमें 90 प्रतिशत पिछड़े समाज के लोग हैं इतनी बड़ी आबादी होने के बाद भी ये 26 करोड मुसलमान पिछड़े बद से बदतर जिन्दगी गुजारने को मजबूर हैं क्योंकि इनको सही राह पर चलाने वाला हमारे पास कोई रहनुमा नही है। हमारे सियासी लीडर पार्टीयों की जीहुजूरी कर के मुस्लिम वोटों की सौदागीरी करके उन्हें गुमराह करने और खुद एम0 एल0 ए0, एम0 पी0, मंत्री बनकर अपना उल्लू सीधा करने में लगे है और ऊचे–ऊचे ओहदों पर बैठे शान से जिन्दगी गुजार रहे हैं। हमारा पिछड़ा समाज जिन्दगी के हर क्षेत्र में जानवरों से भी गयी गुजरी जिन्दगी जीने के लिये मजबूर है। क्या हमारे रहबर ये हकीकत नही देख रहे है। बेशक देख रहे है लेकिन मुह फेर कर आखिर ऐसा क्यों। क्योंकि हमने अपनी आदत पिछे चलने की, भेड़ों जैसी बना ली हैं। अपनी अकल और सूझबूझ से काम नही लिया। हमने कभी भी नही सोचा की जो हमें तरक्की का रास्ता बता रहा है और खुद उसके उल्टी तरफ जा रहा है। आज हमारा मुस्लिम पिछड़ा समाज इस लिये कटपुतली है क्योकि उसने कभी आगे चलने की तथा अगवाही करने की जरूरत नही समझी और ये मुटठी भर होश मन्द लोग समाज के ठेकेदार बन गये है।

हमारे मुस्लिम समाज में सुखी और दुखी दो तरह के लोग है जो सुखी हैं उन्हे क्या जरूरत पड़ी है कि वो आपके लिए संघर्ष करके बदलाव लाये। व्यवस्था में बदलाव की जरूरत हम दुखियारों को है जो तालीम रोजगार और सियासी तौर से पिछड़े और कमजोर होते है। दुखी–दुखी दोस्त होते है अगर सारे दुखी इक्कठे हो जाये तो हम सारे सुखी हो जायेगे। तब ये मुस्लिम ठेकेदार हमें घोखा नही दे पायेगे और हमारे वोटो की सौदागीरी नही कर पायेगें। तब यह लोग हमारे पीछे चलने के लिये मजबूर होगें, हमारा इस्तेकबाल करेंगें क्योकि मुस्लिम पिछड़ों की आबादी ज्यादा है। हमें आपस में एक रहना है तभी हम इज्जत की जिन्दगी जी सकते है।

ये जिन्दगी आप की है अपने पिछड़े समाज के लिये आने वाली पीढ़ी के लिये आज ही अहद करें और संघर्ष के लिए उठ खड़े हों। क्योंकि आप कर सकते है मौका है प्रजातन्त्र है जहॉ सर गिने जाते है अगर इस मौके को हाथ से छोड़ा तो आप को खुशहाल जिन्दगी जीने का मौका नही मिलेगा। हमारा मक्सद जीना नही इज्जत से जीना है इज्जत और खुशहाल जिन्दगी संघर्ष से मिलती है। जो कौमे संघर्ष नही करती उन्हें इज्जत नही मिलती, जिन कौमो का जमीर (खुददारी) मर जाती है वे कौमे भी मर जाती है।

> जनाब अनीस ने समाज को बेदार करने के लिए कहा कि ये जिन्दगी आप की है अपने पिछड़े समाज के लिये आने वाली पीढ़ी के लिये आज ही अहद करें और संघर्ष के लिए उठ खड़े हों। क्योंकि आप कर सकते है मौका है प्रजातन्त्र है जहॉ सर गिने जाते है अगर इस मौके को हाथ से छोड़ा तो आप को खुशहाल जिन्दगी जीने का मौका नही मिलेगा।

हम सबका स्वाभीमान मर चुका है अब आपको अपमान ही सम्मान लगने लगा है क्योंकि कभी आपने सोचा है कि जब कोई आपको कुजड़ा, कसाई, जुलाहा, धुना कहकर बुलाता है तो आपको कैसा लगता है क्या आपको तकलीफ नही होती, क्या आपका जमीर गवारा करता है। आखिर कब तक इस बेइज्जती की जिन्दगी गुजारेगें। क्या आपका दिल नही करता की आपको भी हर जगह इज्जत मिले। आखिर किसी न किसी पीढ़ी को इससे छुटकारा तो लेना ही होगा। तो फिर हम इसे अभी से क्यो न करे। आप किसके सहारे बैठे है किसका इन्तजार है। मुल्क को आजाद हुए लगभग 61 साल हो चुके है हमारे इस समाजिक अपमान को सम्मान में बदलने के लिय किसी भी मुस्लिम रहनुमाओं ने आज तक इस अहम सवाल पर गौर नही किया और वे क्यो करने लगें उन्हें क्या गरज पड़ी क्योंकि वे सम्मान से हमेशा जीते आये है। काश उन्हे भी हमारे पिछड़े समाज की तरह अपमानी होना पड़ता तो न जाने कब का इस समस्या का हल हो गया होता और हम लोग बइज्जत जिन्दगी जी रहे होते मगर आज तक ऐसा नही हुआ जबकि गैर मुस्लिम की वह सताई हुई कौमे दलित व पिछड़े जिन पर हजारों सालो से दवगों के द्वारा जुल्म ढाया जाता रहा। यहां तक की दलित को अछूत कहा गया। अगर उसने कोई धार्मिक वचन सुन लिया होता तो उसके कान मे सीसा पिघला कर डाला गया। उसके कमर में झाड़ू और गले में घंटी बान्धी गयी ताकि रास्ते में आने वाले ऊंची जाति के लोग बचकर निकल जायें।

लिहाजा इन तमाम बदतर हालात से मजबूर होकर मुस्लिम पिछड़े समाज को अपने हक और सम्मान के खातिर अपने समाज को जगाने की कोशिश करने की जरूरत है उन्हे संघर्ष का रास्ता दिखा कर तरक्की की मंजिल पर पहुचाने की कोशिश करे। उठों जगों और आगे बड़ों अब किसी रहनुमा को टूकुर–टूकुर ताकने की जरूरत नही है और न उनके स्वार्थी ऐलानों और फरमानों पर गौर करने की जरूरत है ऐसे में हम सब की जिम्मेदारी होती है कि अपनी समस्या का हल हम खुद ढूढ़े। हमने मंसूरी समाज को 29 मार्च लखनऊ में इकट्ठा करके साबित कर दिया है कि कुर्बानी कभी बेकार नहीं जाती। ■ नसीम मन्सूरी 'राजन'

Scanned with OKEN Scanner

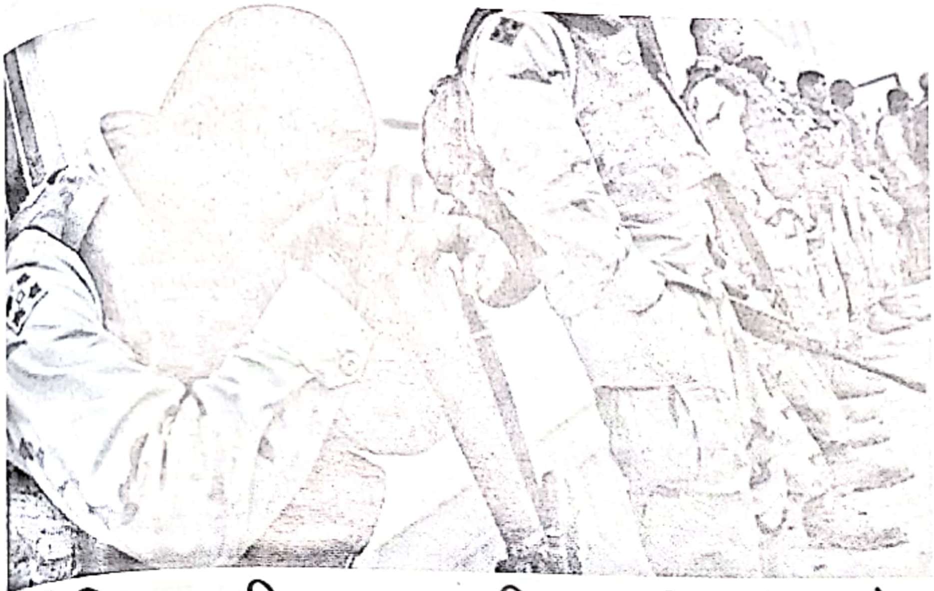

अमेरिका जीत कर भी आतंकवाद से जंग हार गया

"आज सारी दुनियां आतंकवाद की चपेट में है परन्तु आतंकवाद मिटाने का फार्मूला दुनिया के किसी भी देश के पास नहीं है जिस देश ने भी आतंकवाद को मिटाने की कोशिश की है वह खुद आर्थिक तबाही की चपेट में आ गया हैं। कई मुल्क तो अपना वजूद खो देने के कगार पर खड़े हैं सारी दुनियां ने आतंकवाद से लड़ने के लिए एक ही फार्मूला अपनाया हुआ है आतंकवाद को मिटाने के लिए आतंक का इस्तेमाल, यही वजह है कि दुनियां से आतंकवाद बजाय मिटने के बढ़ता जा रहा है।"

आतंकवाद बढ़ने की दूसरी सबसे बड़ी वजह है आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई करने वाले मुल्कों द्वारा आतंकवाद का इस्लामीकरण कर देना यह इस्लामीकरण आतंकी संगठनों की मजबूत कड़ी बनकर उभरी है जिसका सारा फायदा भी आतंकी संगठनों ने उठाया है।

इतिहास गवाह है कि जिस आतंकवाद के सहारे अमेरिका ने सोवियत संघ को तबाह कर खुद दुनियां की महा शक्ति बन बैठा। आज वही उसे तबाह करने पर अड़ा है दुनिया भर में आतंकवाद मिटाने वाली सभी ताकतों ने इस्लाम मजहब को नुकसान पहुंचाने की गंदी नीयत के चलते आतंकवाद को इस्लामिक आतंकवाद का नाम दे दिया यह एक बहुत बड़ी भयानक चूक थी जिसका खामियाजा आज सारी दुनियां भुगत रही है अमेरिका तथा दुनियां की दूसरी ताकतें यह भूल गई कि इस्लामिक आतंक के नाम पर वे जो लड़ाई लड़ रहे हैं यह लड़ाई कभी खत्म नहीं होगी। क्योंकि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई का मूल रूप बदल गया है अब लड़ाई आतंकवाद से नहीं बल्कि इस्लाम मजहब से लड़ी जा रही है जिसका सारा फायदा आतंकी संगठन उठा रहे हैं आतंकवाद पैदा कैसे हुआ?कौन सी बुजूहात हैं कि मुजाहिदीन कहे जाने वाले आज आतंकी कहलाने लगे कल तक जिनकी लड़ाई हक पर थी आज अमेरिका की नज़र में नाहक हो गई क्यों भड़कता है उग्रवाद और आतंकवाद आखिर आतंकवादी कहते किसे हैं आतंकवाद की परिभाषा क्या है?इस्लाम मजहब को नुकसान पहुंचाने की साजिश का पर्दाफाश हो गया अमेरिका व मित्रराष्ट्र आतंकवाद से नहीं इस्लाम मजहब से लड़ाई लड़ रहे हैं अगर ये मुल्क ईमानदारी से आतंकवाद की समस्या का समाधान करते तो दुनियां में आतंकवाद बजाय बढ़ने के खत्म हो जाता। इन मुल्कों के दोहरे मापदण्डों के कारण आतंकवाद बढ़ता जा रहा है। मुस्लिम जगत की अमेरिका से नाराजगी का कारण भी अमेरिका द्वारा अपनाये जा रहे दोहरे मापदण्ड ही हैं अमेरिका तथा उसके मित्रराष्ट्र इस्लाम विरोधी साबित हुए हैं जहां कहीं भी इस्लाम पसन्दों की हुकूमत अमल में आती अमेरिका, ब्रिटेन दुनियां के सभी मुस्लिम दुश्मन देश उसके वुजूद को मानने से मना कर देते हैं यहां तक की उस हुकूमत पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाकर उस हुकूमत का वुजूद दुनियां से खत्म करने की एक सोची समझी रणनीति के तहत् काम करते हैं, जिसकी वजह से इस्लाम पसन्द लोग अपने मन में इन मुल्कों के प्रति हीन भावना रखते हैं दुनियां में कोई भी पत्रकार या लेखक इस्लाम मजहब पर आपत्तिजनक लेख लिख देता है उसे अमेरिका तथा ब्रिटेन की शरण मिल जाती है जबकि इस्लाम पसन्द उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही की मांग करते हैं। अमेरिका का पसन्दीदा मुल्क इसराईल द्वारा मुसलमानों पर खुलकर बमबारी करते रहने पर भी उसके खिलाफ कोई कार्यवाही न करना उल्टे फिलस्तीन व हमास जैसे इस्लामी संगठनों को आतंकी करार देकर उन पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाया जाता है तथा फिलस्तीनी मुसलमानों पर तरह–तरह के जुल्म किये जाते हैं उनकी बस्तियां, स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटलों पर बमबारी करना आम बात है उन्हें अपने ही देश से खदेड़ा जाता है। अब तो हद हो गई संयुक्तराष्ट्र संघ के कार्यालय पर भी बमबारी होने पर भी कोई कार्यवाही नहीं होती। अपने लाडले इसराईल के खिलाफ अमेरिका कोई कार्यवाही नही कर रहा है। इतना होने पर भी मुसलमानों पर ही कार्यवाही होती है। जबसे इसराईल का बजूद दुनियां में आया तबसे आज तक उसकी हर तरह से मदद की जाती है यहां तक कि आर्थिक मदद के बहाने अमेरिका, ब्रिटेन द्वारा इसराईल को एटमिक

शिकस्त

ताकत तक दे डाली।

मजलूम मुलसमानों द्वारा जिहाद का पहला पौधा – इसराईल में ही जन्मा यहीं से यह पौधा धीरे–धीरे अरब देशों में फैला। उधर अमेरिका तथा सोवियत संघ में विश्व शक्ति बनने की होड़ मची हुई थी। अमेरिका ने मौके का फायदा उठाया एक तीर से कई निशाने साधे इस्लामिक मुजाहिदीन को मुसलमानों की मदद के लिये सोवियत संघ से लड़ने हेतु अफगानिस्तान भेजा गया ताकि इस्राईल से इस्लामिक मुजाहिदीन का ध्यान हटाया जाये। इस्राईल लड़ाके अब सोवियत संघ के मुकाबले जंग कर रहे थे। अमेरिका की चाल कामयाब रही। सोवियत संघ तबाहकुन जंग लड़ रहा था मुजाहिदीन अब सोवियत संघ के लिये आतंकवादी बन गये परन्तु अमेरिका उन्हें इस्मालिक मुजाहिदीन बता रहा था। संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी मुजाहिदीन की वकालत हुई जबकि सोवियत संघ व उसके मित्रराष्ट्र इस्लामिक मुजाहिदीन को आतंकवादी मानते हुए उनके खिलाफ कार्यवाही की मांग करते रहे। आखिरकार सोवियतसंघ जंग हार गया उसकी आर्थिक कमर टूट गई और वह वक्त आ गया जब सोवियत संघ कई टुकड़ों में बदल गया। इस तरह इस्लामिक मुजाहिदीन की मदद से अमेरिका दुनियां की महाशक्ति बन गया। उधर अरब लड़ाके फिलस्तीन की सर जमीन आजाद कराने हेतु अफगानिस्तान से इस्राईल के लिये रवाना हुए। इस्राईल की चिन्ता बढ़ गई अमेरिका का लाडला इस्लामिक मुजाहिदीन के निशाने पर था इस्लामिक मुजाहिदीन उसे सबक सिखाना चाहते थे इस्राईल की खुफिया एजेंसी मूसाद ने अमेरिका से मदद मांगी। अमेरिका अब दुनियां की महाशक्ति था उसे अपने लाडले की हिफाजद भी करनी थी तथा दुनियां पर हुकूमत भी निशाना था तेल का बाजार। फिर से एक गन्दी साजिश ईराक का कुवैत पर हमला और कुवैत

> राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा अगर ईमानदारी से प्रयास करें तो अमेरिका के आतंकी चेहरे को दुरुस्त कर सकते हैं। मगर यह तब ही मुमकिन है जब वह जार्ज बुश के रास्ते से अमेरिका को वापस लायें और इस्राईल की आतंकी साजिशों में मददगार बनने के बजाय उसे रोकें और जिसका जो जायज हक है उसे दिलाने का ईमानदारी से प्रयास कर

की मदद के बहाने तेल की दुनियां पर कब्जा यहीं से शुरु हुआ आतंक का भयावह तांडव। मुस्लिम जगत की अमेरिका के खिलाफ आवाज उठाना अचानक 9/11 का हादसा होना जिसकी साजिश मूसाद और अमेरिकी खुफिया एजेन्सी ने मुसलमानों को बदनाम करने के लिए रची थी ताकि ईराक और अफगानिस्तान पर कब्जा कर सकें। अमेरिका द्वारा रची गई साजिश कामयाब रही और अफगानिस्तान ईराक पर कब्जा कर लिया गया जिस जंग में 15 लाख से ज्यादा मुसलमान मारे गये 3 करोड़ मुसलमान जंग से प्रभावित हो गये। अमेरिका द्वारा लाखों टन गोला–बारूद बरसाया गया हर वह कार्यवाही हुई जिसकी कल्पना करना नामुमकिन था। 12 साल के लम्बे युद्ध के बाद आज अमेरिका युद्ध जीत कर भी अपने मित्र राष्ट्रों के साथ इस्लामिक मुजाहिदीन से जंग हार गया।

इस्लामिक मुजाहिदीन पहले से ज्यादा ताकत में हैं आतंकवाद को मिटाने की सारी कोशिशें नाकामयाब रही है अमेरिका खुद आर्थिक तबाही झेल रहा है आतंक की जिस लड़ाई ने सोवियत संघ जैसी महाशक्ति को तबाह कर दिया आज वही इस्लामिक मुजाहिदीन अमेरिका पर भारी पड़ रहे हैं अगर ईमानदारी से मुस्लिम जगत की समस्याओं पर ध्यान दिया जाये और इस्लामी मुजाहिदीन से शांतिवार्ता की जाये तथा उनकी जायज मांगे मानी जाये तो विश्वशांति पर एक नई पहल होगी। अमेरिका यह अच्छी तरह से जानता है संयुक्त राष्ट्रसंघ का कानून है कि कोई भी मुल्क दूसरे मुल्क पर कब्जा नहीं कर सकता और न ही उस मुल्क पर अपनी मर्जी की सरकार बना सकता है। हर देश को यह अधिकार है कि वह अपने देश में जबरन घुसाई विदेशी फौजों को अपने यहां से खदेड़ दे अफगानिस्तान, ईराक और फिलस्तीन से अमेरिका और उसके सहयोगियों को निकाल बाहर करना इन देशों के प्रत्येक नागरिक का फर्ज है। दुनियां के सभी देशों को इन मजलूम देशों के नागरिकों की मदद करनी चाहिए तथा अमेरिका और इस्राईल जैसे आतंकी देशों को दुनियां में आतंक फैलाने से रोकना चाहिए। विश्व में आतंक के प्रायः बने जार्ज बुश की जिल्लत के साथ विदाई के लिये शुभ संकेत है। नये राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा अगर ईमानदारी से प्रयास करें तो अमेरिका के आतंकी चेहरे को दुरुस्त कर सकते हैं। मगर यह तब ही मुमकिन है जब वह जार्ज बुश के रास्ते से अमेरिका को वापस लायें और इस्राईल की आतंकी साजिशों में मददगार बनने के बजाय उसे रोकें और जिसका जो जायज हक है उसे दिलाने का ईमानदारी से प्रयास करें तो मुमकिन है परिस्थितियां बदलने लगें। और आतंकवाद विश्व से समाप्ति के आसार आने लगें।

अन्यथा जो इस्लामिक मुजाहिदीन खुद मिटने को तैयार बैठे हैं, उन्हें दुनियां की कोई ताकत नहीं मिटा सकती।

■ **अब्दुल लतीफ**, आरको, जयपुर

Scanned with OKEN Scanner

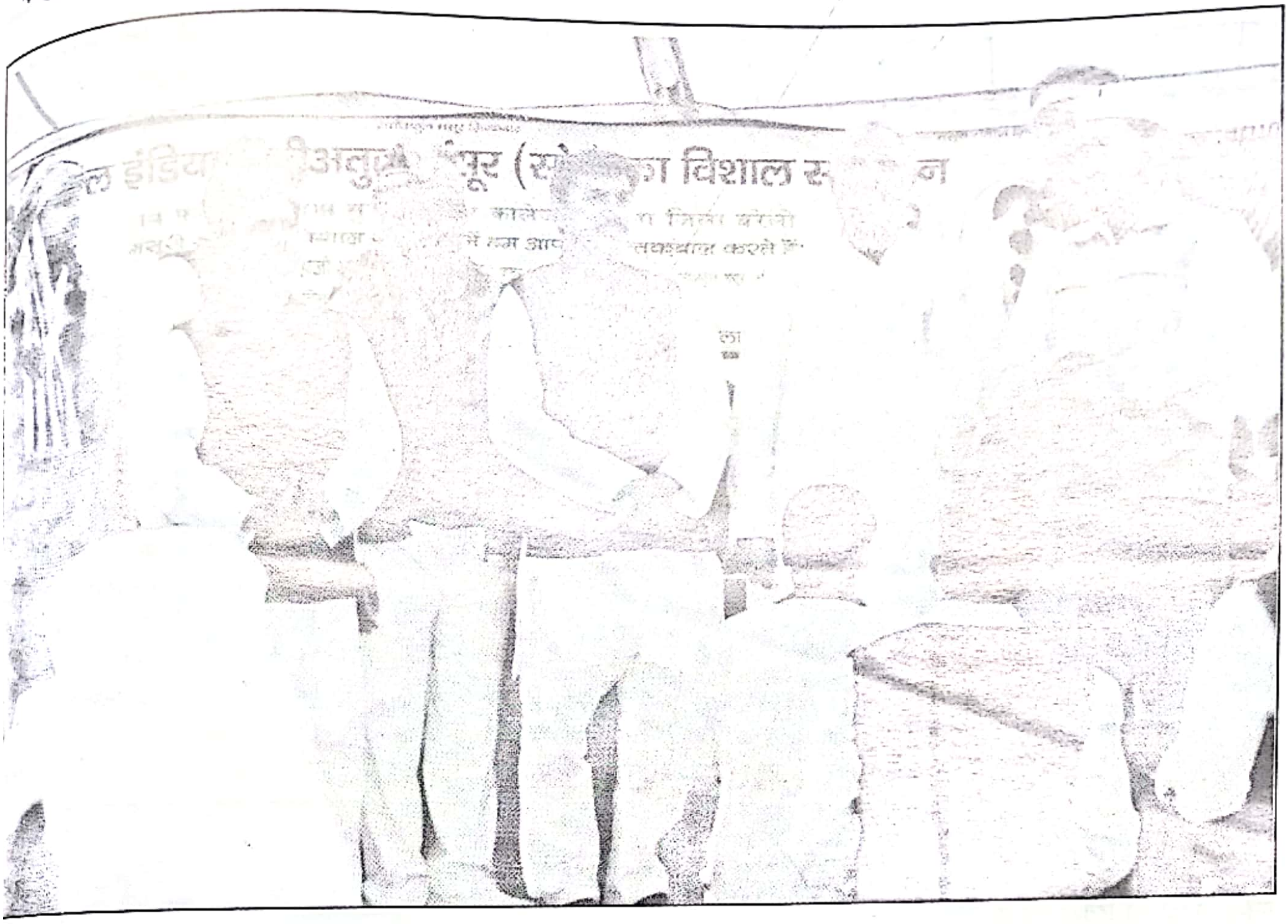

निकाह में आसानियाँ

प्रदेश में मंसूरी समाज की आवादी लगभग 1.60 करोड़ है और मुल्क में लगभग साढ़े सात करोड़।

पसमांदा और गरीब मुस्लिम तब्का इज्तिमाईशादी सम्मेलन में शरीक होकर अपने बच्चे और बच्चियों की अजदवाजी जिन्दगी की शुरूआत करें, मंसूरी समाज की यह पहल आज पूरे मुस्लिम समाज के लिये एक नये सुबह की रोशनी तरह बनकर रूनुमा हुई है।

शाहजहांपुर- उसमान बाग शाहजहांपुर में आल इण्डिया मंसूरी समाज के जिला स्तरीयसम्मेलन में बरेली मंडल मुस्लिम समाज का पहला सामूहिक विवाह सम्मेलन कराकर तवारीख का एक नया वाद खोलकर इस मुबारक मौके पर आल इण्डिया मंसूरी समाज के प्रदेश सदर आली जनाब अनीस मंसूरी, प्रदेश महा सचिव जनाब अंजुम अली मंसूरी, पिछड़ा वर्ग कल्याण राज्यमंत्री अवधेश वर्मा, विधायक निगोहा जनाब रोशन लाल वर्मा, आली जनाब रामचन्द्र जी प्रधान राज्यमंत्री व तमाम दीगर लोगों ने प्रोग्राम में हिस्सा लेकर नवउरूज जोड़ों को मुबारकबाद से नवाजा गया और तोहफे दिये गये।

इस मौके पर अवाम को खिताब करते हुए तंजीम के सूबाई सदर जनाब अनीस मंसूरी ने कहा कि आजादी के बाद से हमारे समाज को गुमराह किया जा रहा है। प्रदेश मंसूरी समाज की आवादी लगभग 1.60 करोड़ है और मुल्क में लगभग 7 करोड़। असंगठित होने की वजह से इस समाज ने अपना कोई नुमाइन्दा लोकसभा और विधान सभा में नहीं भेजा। जिसका नतीजा यह निकला कि हम हुकूमत से अपना अधिकार नहीं मांग पाये। पार्टियां इस बिरादरी को वोट बैंक की तरह इस्तेमाल करती रहीं। मनुवादी विचारधारा के मुस्लिम समाज के 16 प्रतिशत अशराफ ने 84

Scanned with OKEN Scanner

प्रतिशत पिछड़े मुसलमानों को आगे बढ़ने का मौका ही नहीं दिया।

मंसूरी साहब ने समाज को खिताब करते हुए कहा कि अगर हमें दीन और दुनियाबी कामयाबी हासिल करना है तो हमें तालीम की तरफ रूजू होना होगा और रास्तों पर कब्जा करना होगा।

आली जनाब राम चन्द्र जी प्रधान राज्य मंत्री ने कहा कि मंसूरी समाज को आगे बढ़ने के लिये राजनैतिक हिस्सेदारी जरूरी है। इसके लिए राजनैतिक सोच को विकसित करने की जरूरत है।

शाहजहांपुर में इज्तिमाईशादी सम्मेलन में शामिल हुए दुल्हन व दुल्हा

विधायक जनाब रोशन लाल वर्मा जी नें कहा कि बहन मायावती जी हमेशा पिछड़ों की हितैशी रही हैं और उन्होंने हमेशा हर पिछड़े व कमजोर समाज को आगे लाने की कोशिश की है। मैं भी पिछड़े समाज से हूँ हर तरफ से हमेशा आपके साथ रहूंगा।

अपने ख्यालों का इज़हार करने वाले जनाब अंजुम अली मंसूरी, मुख्तार मंसूरी, अनवार मंसूरी के अलावा कई और लोगों ने भी अपने ख्याल का इज़हार किया।

हाजरीन में इंतजार मंसूरी, अतीक मंसूरी, सुल्तान मंसूरी, लियाकत अली, डा0 शाहिद मंसूरी, हाजी इकरार मंसूरी, डा0 पुत्तन मंसूरी, साजिद मंसूरी इनके अलावा वेदप्रकाश शर्मा आदि मौजूद थे। ●

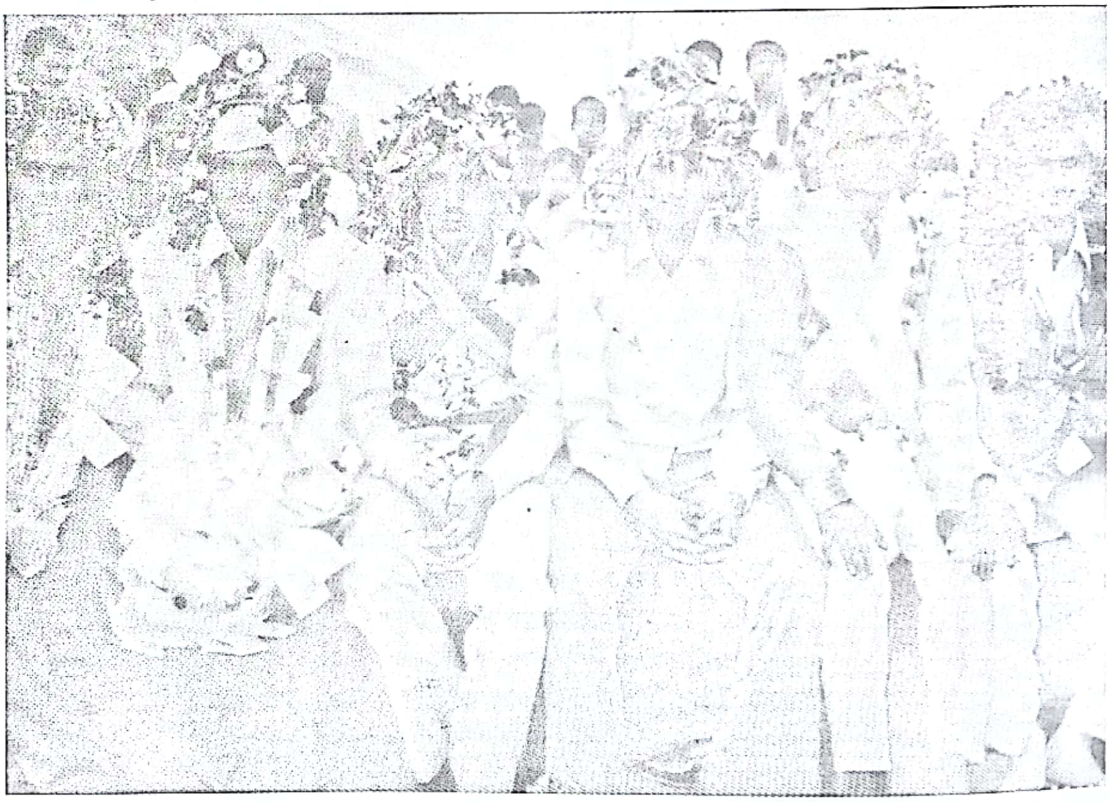

Scanned with OKEN Scanner

मंसूरी तराना

याद हर एक को मन्सूर आने लगे।
चढ़ के सूली पे भी मुस्कराने लगे।।
जश्ने मन्सूरियत हम मनाने लगे।
देखकर लोग भी मुस्कुराने लगे।।
आज मन्सूरी कहकर बुलाने लगे।

तीरे मिजगाँ वोह दिल पर चलाकर गेरे।।
क्या कहें किस कदर गुल खिलाने लगे।
पहले धुनिया थे नद्दाफ फिर बन गये।।
आज मन्सूरी कहकर बुलाने लगे,
आज मन्सूरी कहकर बुलाने लगे।

कुछ तो रिश्ते हमारे पुरानों से थे।
भूले बिछड़े भी अब साथ आने लगे।।
थे जो सदियों के सपने नज़र में बसे।
दिल की महफिल वही अब सजाने लगे।
आज मन्सूरी कहकर बुलाने लगे।

कल जो तोहमत लगाते थे रब की तरफ।
आज वोह अपने दिल में बिठाने लगे।।
पहले नजरों से नजरें मिलाने लगे।
फिर निगाहों से दिल में समाने लगे।।
आज मन्सूरी कहकर बुलाने लगे।

कल जो राहों में काँटे बिछाते थे वोह।
फूल राहों में अब वोह बिछाने लगे।।
इत्तिफाकन नज़र उन से क्या मिल गयी।
रूबरू बारहा फिर वोह आने लगे।।
आज मन्सूरी कहकर बुलाने लगे।

दिल में हर एक के आज अनीस बस गये।
कह के यह वोह कसम सर की खाने लगे।।
नाम अकबर बहुत दूर अब हो गया।
लोग मन्सूरी कहेकर बुलाने लगे।।
आज मन्सूरी कहकर बुलाने लगे।

अकबर अली मन्सूरी 'अकबर'
बाराबंकी

Scanned with OKEN Scanner

All India Muslim Marriage Bureau

रिश्तों की जानकारी कैसे करें?

सबसे पहले आप अपने रिश्ते का बायोडाटा और एक फोटो ऑल इण्डिया मुस्लिम मैरिज ब्योरो, S.S.E./47, सेक्टर-C, सीतापुर रोड योजना, सबौली, कुर्सी रोड, लखनऊ'' को भेजें। V.I.P., V.V.I.P., सभी तरह के रिश्तों की रजिस्ट्रेशन फीस 500 रूपये मनीआर्डर या बैंक खातें में जमा करें। रिश्ता तय हो जाने के बाद मैरिज ब्यूरो की माली मदद करनी होगी।

सभी मुस्लिम बिरादरियों के लिए शादी लायक लड़के और लड़कियां

S.N.	Cod No.	Sex	बिरादरी	जिला	प्रांत	कद	उम्र	तालीम	कारोबार
1.	2499	M	मंसूरी	कानपुर	उ.प्र.	5.7"	25	M.B.A.	प्राइवेट सर्विस
2.	2497	"	मंसूरी	देहरादून	उत्तरांचल	5.8"	27	ग्रेजुएट	सरकारी मुलाजिम
3.	2495	"	मंसूरी	हरदोई	उ.प्र.	5.8"	25	ग्रेजुएट	ट्रांसपोर्ट
4.	2492	"	मंसूरी	डोरांडा	रांची	5.10"	26	होटल मेनेजमेन्ट	सर्विस
5.	2488	"	मंसूरी	नेनीताल	उत्चल.	5.8"	35	एम.ए.	तिजारत
6.	2487	"	मंसूरी	बस्ती	उ.प्र.	5.5"	28	एम.बी.ए.	तिजारत
7.	2485	"	मंसूरी	हरदोई	उ.प्र.	5.4"	28	एम.बी.ए.	टीचर
8.	2484	"	मंसूरी	शाहजहांपुर	उ.प्र.	5.3"	25	हाईस्कूल	स0 मुलाजिम
9.	2480	"	मंसूरी	ग्वालियर	म.प्र.	5.10"	30	एल.एल.बी. प्रेक्टिस	
10.	2478	"	मंसूरी	अम्बाला	पंजाब	5.11"	28	एम.टेक	रेलवे इंजीनियर
11.	2472	"	मंसूरी	अलीगढ़	उ.प्र.	5.11"	30	इंजीनियर (दुबई)	
12.	2470	"	मंसूरी	इलाहाबाद	उ.प्र	5.5"	35	ग्रेजुएट (डिप. पैथॉलाजी)	निजी
13.	2467	"	मंसूरी	बम्बई	महारा.	5.6"	25	एम.ए.	(अर्टीफीशियल ज्वैलरी)
14.	2466	"	मंसूरी	दिल्ली	दिल्ली	5.6"	26	होटल मेनेजमेन्ट	सर्विस
15.	2465	"	मंसूरी	बैंगलूर	कर्नाटक	5.7"	28	एम.सी.ए.	
16.	2463	"	मंसूरी	अलीगढ़	उ.प्र.	5.6"	25	एम.बी.ए.	कारोबार
17.	2462	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	24	बी.डी.एस.	(क्लीनिक, उन्नाव)
18.	2460	"	मंसूरी	देहरादून	उत्तरां.	5.7"	28	बी.ई.	सर्विस
19.	2455	"	मंसूरी	टीकमगढ़	उ.प्र.	5.6"	28	एम.ए.	तिजारत
20.	2007	F	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.3"	24	एम.एस.सी. ज्योलॉजी	
21.	2005	F	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.3"	20	बी.कॉम.	
22.	2004	"	मंसूरी	इलाहाबाद	उ.प्र.	5.2"	32	पोस्ट ग्रेजुएट	
23.	345	M	कुरेशी	लखनऊ	उ.प्र.	6.0"	38	मेडिकल डिप्लोमा	मेडिकल स्टोर
24.	352	M	शेख	लखनऊ	उ.प्र.	6.1"	28	बी.टेक. (M.C.S.E., C.C.N.A.)	
25.	188	M	पठान	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	28	इण्टर	सऊदिया में
26.	373	M	अंसारी	बनारस	उ.प्र.	5.4"	28	ग्रेजुएट	
27.	375	F	सिद्दीकी	लखनऊ	उ.प्र.	5.3"		M.S.W., B.Sc.	

Scanned with OKEN Scanner

अधिकार सम्मेलन में पर्दा नसीन महिलाएं भी शामिल हुई और अब वह भी बेदार हो गई है कि मन्सूरी समाज अपने अधिकारों को हासिल कर सके।

आधिकारों की उम्मीद में उमड़ा मन्सूरी सैलाब

Scanned with OKEN Scanner

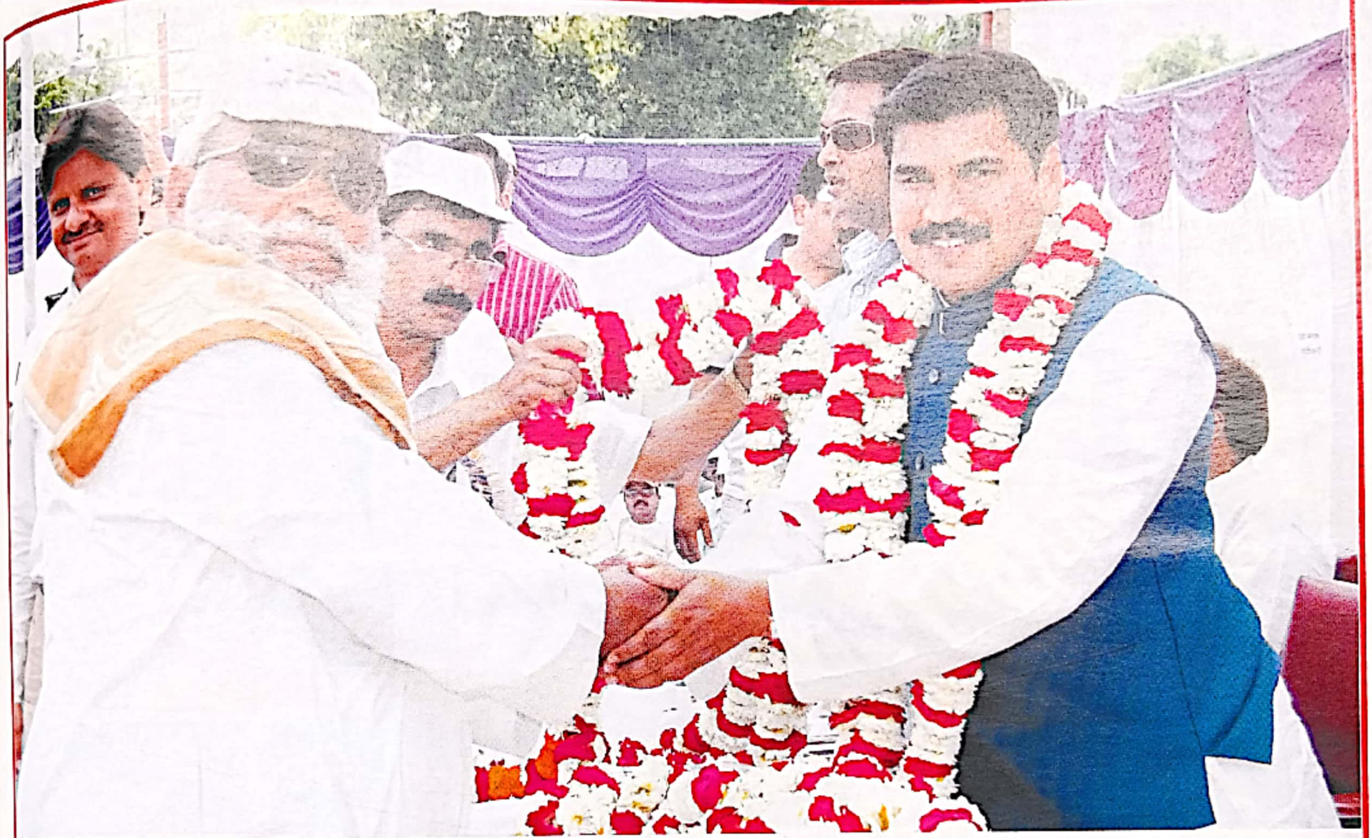

बड़े भाई नग्गन अली मन्सूरी अनीस मन्सूरी को मुबारकबाद देते हुए

सेठ जलील मन्सूरी अपने साथियों के हमराह

तंजीम के ओहदेदरान और रहनुम-ए- कौम

फलदार के नसीब में पत्थर की चोट

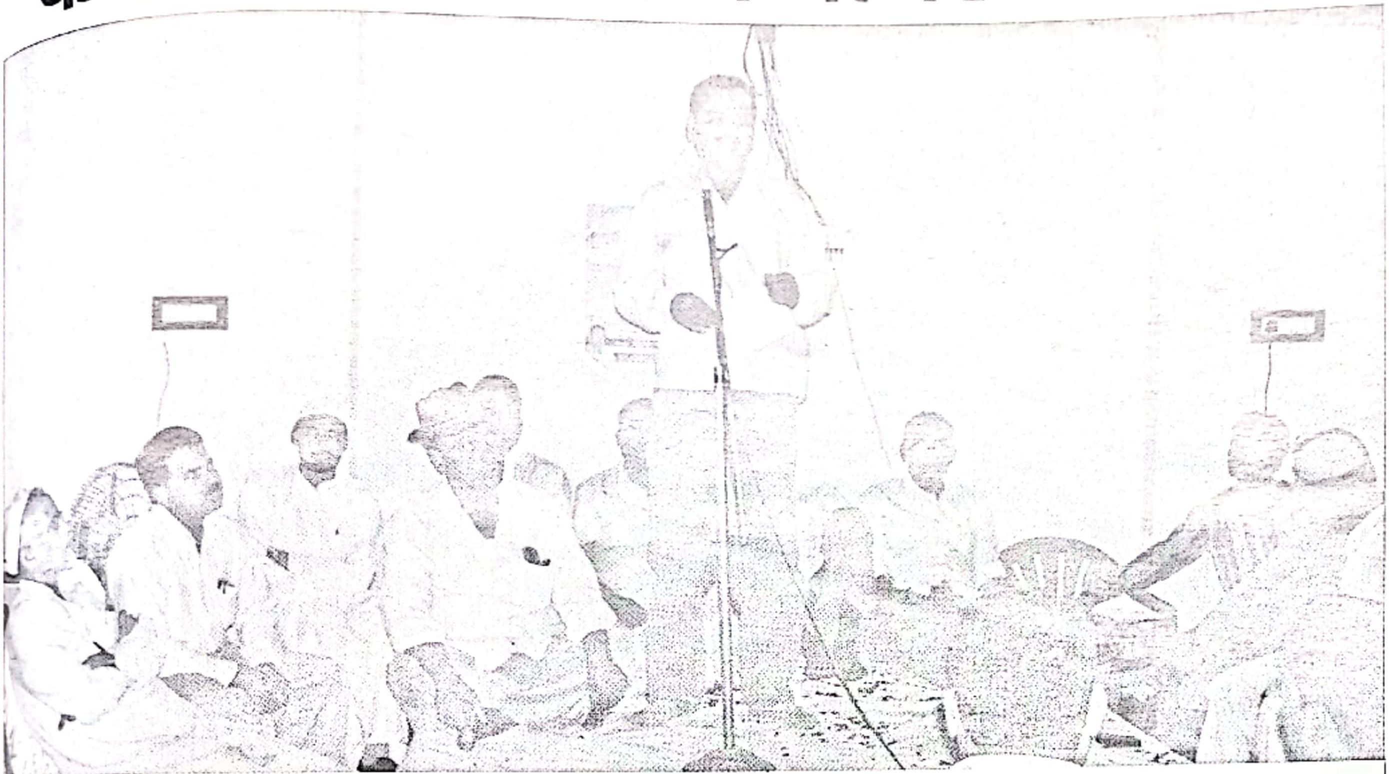

जनाब इकबाल मन्सूरी, जिला महामंत्री, लखनऊ जल्सा खिताब करते हुए

लखनऊ, सीतापुर रोड। मौलाना मतीन मन्सूरी के तिजारती इदारे के इफ्तिताही मौके पर मेहमाने खुसुसी आली जनाब इकबाल मन्सूरी ने अवाम को खिताब करते हुए कहा कि मन्सूरी समाज एक पेशेवर कौम है, जिसका वजूद दुनिया की तहजीब और तरक्की से वाबस्ता है। इंसानी तहजीब का सीधा ताल्लुक कपड़े से है और कपड़े का सीधा संबंध धुनकर समाज से है जो कपास को साफ करके रुई और रुई से धागा बनाने के साथ ही इंसानी सुकुन और अराम के लिए रजाई गद्दे और तकीया वगैरा का निर्माण करते हैं लेकिन इस समाज का हाल फलदार पेड़ की तरह रहा जब उसमें फल पक जाते हैं तो उस पर पत्थरों की मार पड़ती है ठीक इसी तरह मन्सूरी समाज के हुकूक सियासी और समाजी तंजीमों के ठेकेदारों ने पमाल किये लेकिन यह समाज घबरा कर दूर नहीं भागा और समाज की भलाई में लगा रहा। इस समाज को तमाम सियासी पार्टियों ने अपना वोट बैंक समझा लेकिन बदले में कुछ नहीं दिया। आज का जमाना हुकूक पाने का नहीं हुकूक छीनने का है और इसी अधिकार की लड़ाई के लिए हम 29 मार्च को अपनी ताकत का इज़हार किया। समाज के पास रोजगार के नाम पर सिर्फ साल के तीन माह काम ही रहता है बाकी नौ माह दर–दर मजदूरी के लिए भटकते हैं। आर्थिक स्थिति खराब होने से तालीम और कारोबार में पिछड़ गया।

आज अल्लाह ने हमारे बीच एक ऐसा नौजवान दिया है जो अपना तन–मन और धन लगा कर कौम की भलाई में लगा है और मजबूत संगठन कराके सियासत में हिस्सेदारी की पहल शुरु कर दी है क्योंकि सियासत और हुकूमत ऐसी चाभी है जिससे सभी ताले खोले जा सकते हैं। हमसब का फर्ज है कि अपने नेता की आवाज पर लब्बैक कह कर तंजीम को कामयाब बनायें ताकि अगली सरकार में हमारी हिस्सेदारी हो। मन्सूरी समाज के तमाम हुकूक बहाल किए जायें। हमारा कौमी लीडर अनीस मन्सूरी समाज के लिए काम कर रहा है। लोग उस के ऊपर अंगुली उठाते हैं जो कि गलत है। अगर उनका एमएलए या एमपी बनने का मकसद होता तो जो पैसा समाज पर खर्च कर रहे हैं इतने में वह अराम से चुनकर हाउस में पहुंच जाते लेकिन वह यह नहीं चाहते बल्कि समाज को कुछ दिलाना चाहता है जिससे समाज मज़बूत हो।

इस जल्से की शुरुआत जनाब मौलाना मतीन मन्सूरी के तिलावते कुरान पाक से शुरु हुई। निज़ामत का हक अदा किया जनाब मौलाना इल्यास मन्सूरी ने और सदर का औहदा संभाला जनाब मोहम्मद इकबाल मन्सूरी ने।

तकरीर में हिस्सा लेने वालों में हाफीज मोहम्मद इब्रहीम मन्सूरी, जफर मन्सूरी, डॉ. रफीक मन्सूरी, चांद मन्सूरी, शब्बन मन्सूरी, डॉ. मोहम्मद अनवार मन्सूरी, इकबाल मन्सूरी, हामीद मन्सूरी और मौलाना इल्यिास मन्सूरी ने जलसे को कामयाब बनाया।

Scanned with OKEN Scanner

बहन मावावती के 53वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में

मन्सूरी समाज की 53 गरीब बेटियों की शादियां

उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बहन मायावती के जन्मदिन के अवसर पर ऑल इण्डिया मन्सूरी समाज के राष्टीय उपाध्यक्ष जनाब सेठ अब्दुल जलील मन्सूरी ने जिला जालौन में बहन मायावती के जन्मदिन को यादगारी और एतिहासिक बनाने के लिए उनके 53वें जन्मदिन पर मन्सूरी समाज की 53 गरीब लड़कियों की शादियां की। बसपा से जुड़े जितने भी समाज है किसी ने भी बहनजी के जन्मदिन पर उन्हें ऐसा तोहफा नहीं दिया जिससे उनके लिए दुआएं निकले, पर जनाब सेठ जलील मन्सूरी ने ऐसा कर दिखाया।

जनाब सेठ जलील मन्सूरी मुंबई में कारोबारी है इतनी बुलंदी पर पहुंचने के बाद भी अपने लोगों और समाज को नहीं भूले जहां आज इस दुनिया में थोड़ी सी कामयाबी मिलने पर लोग सबसे पहले अपने समाज के लोगों को भूल जाता है और कामयाबी के नशे में चूर हो जाता है पर जलील मन्सूरी उन लोगों की फेहरिस्त से अलग है। वे अपनी उस जन्म भूमि को नहीं भूले जहां से उन्होंने अपना कारवां शुरू किया था।

जनाब सेठ जलील मन्सूरी ने अपने नेक मकसद को आगे बढ़ाते हुए जालौन में 53 गरीब लड़कियों की शादियों का एहतमाम किया। उन्होंने इस काम को करने के लिए बहन मायावती के जन्मदिन को चुना क्योंकि उन्होंने माननीय काशीराम के प्रयासों से प्रेरणा ली है कि जैसे उन्होंने अपने समाज को आगे ले जाने के लिए और उसे दुनिया में इज्जत दिलाने के लिए जो काम किए है वह हर कोई नहीं कर सकता। जनाब सेठ जलील मन्सूरी ने तय कर लिया है कि जिस तरह आज दलित आगे बढ़ रहा है उसी तरह मन्सूरी समाज जो पिछड़ गया है और अपने अधिकारों से महरूम है। उन्होंने ठान लिया है कि जब तक वह मन्सूरी समाज को एक प्लेटफार्म पर नहीं ले आते और उसके अधिकारों को नहीं दिला देते तब तक वह चैन से नहीं बैठेंगे।

आज हर वह समाज जो पिछड़ गया है उसको आगे लाने का बीड़ा नौजवानों ने ही उठाया है उसी तरह सेठ जलील मन्सूरी ने भी मन्सूरी समाज को आगे ले कर एक नेक मकसद लिया जिसको पाने के लिए वह रास्ते चल पड़े हैं। उन्होंने इसका अगाज जालौन में 53 लड़कियों की शादी करा कर किया और अब वह आगे ऐसे कई काम करते रहेंगे जिससे कि समाज को आगे ले जाया जा सके। आज अगर आपका सियासत में हिस्सा नहीं है तो आप अपने अधिकारों को नहीं पा सकते। इसी बात को समझते हुए सेठ जलील मन्सूरी ने मन्सूरी समाज को बहुजन पार्टी से जुड़ने का अहावान किया है ताकि सियासत में हिस्सेदारी पाकर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ी जा सके। इसी के तहत उन्होंने मन्सूरी समाज के लोगों से अपील की है कि वह बहन मायावती को कामयाब बनाने के लिए अपनी वोट की ताकत का मुजाहरा करें। सेठ जलील मन्सूरी ने लोगों से वादा किया है कि वह अपनी आखरी सांस तक मन्सूरी समाज के हुकूक के लिए लड़ते रहेंगे चाहे उसकी कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। इस मौके पर मेहमाने–ए–खुसूसी ऑल इण्डिया मन्सूरी समाज और प्रदेश सदर आली जनाब अनीस मन्सूरी ने लोगों से खिताब किया।

Scanned with OKEN Scanner

मेहमान-ए- खुसूसी अदब के शहर लखनऊ में

लखनऊ में रोमी गेट के सामने आली जनाब एम.ए. शेख मन्सूरी, मुंबई और जनाब हाजी इस्माईल के साथ

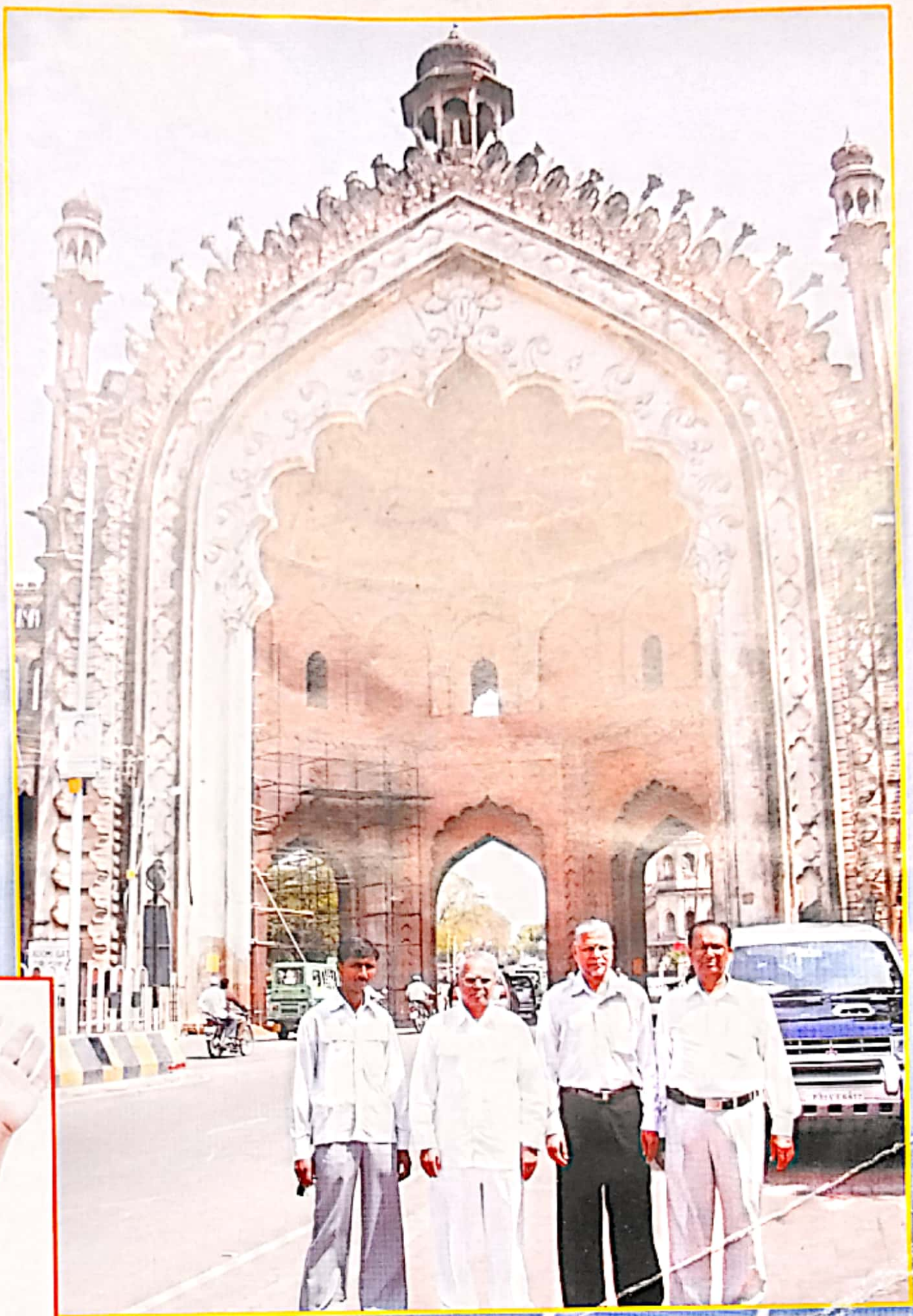

कौमी सरपरस्त

आली जनाब वकील अहमद मन्सूरी, लखनऊ अधिकार सम्मेलन में आवाम का इस्तेकबाल करते हुए।

Scanned with OKEN Scanner

बाबा साहेब अम्बेडकर
अमर रहे

बी.एस.पी की विचारधारा एवं नीति
'सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय'
पर आधारित है जिसके
तहत सभी पिछड़े व कमजोर वर्गों

मा. काशीराम
अमर रहे

को शामिल कर उनके
अधिकार दिलाने
का कार्य किया जा रहा
है। इसलिए अगर
मुसलमानों का भविष्य
सुरक्षित है
तो बसपा में है।
–अनीस मन्सूरी

मन्सूरी समाज
बहन मायावती के साथ

Scanned with OKEN Scanner